RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण
आध्यात्म की नई उड़ान...
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
वर्ष 06 अंक 07 हिन्दी (मासिक) जुलाई 2019 सिरोही पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 9.50

04 ऑप्शन न ढूंढ एडजेस्ट करने की....

09 पर्यावरण सन्तुलन से राष्ट्रनिर्माण एवं.....

ब्रह्माकुमारीज़ ने देश में पहली बार नार्थ कैब यूनिवर्सिटी गुरुग्राम में शुरू की अनोखी लैब, कई विद्यार्थियों के जीवन में आया परिवर्तन

थॉट लैब से सकारात्मक संकल्पों का सृजन

2018 से शुरुआत

01 पहला प्रोजेक्ट नार्थ कैब यूनिवर्सिटी में

05-06 विद्यार्थियों का ग्रुप बनाकर किया प्रयोग

50 फैकल्टीज को हुआ फायदा

500 विद्यार्थियों को इस लैब से मिला लाभ

10 मेडिटेशन टीचर्स ने दी ट्रेनिंग

कई विद्यार्थियों का बदला जीवन, दुःख, चिंता, तनाव छोड़ सकारात्मक जीवनशैली अपनाई

शिव आमंत्रण गुरुग्राम। किसी नए आविष्कार का रास्ता प्रयोगशाला (लैबोरेटरी) से होकर जाता है। अंतरिक्ष से लेकर पाताल में वैज्ञानिकों ने नई-नई खोजें कर दुनिया को अचंभित किया है। इसमें एक कदम आगे बढ़ाते हुए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शिक्षा प्रभाग ने वर्षों तक मानव मन व मतिष्क का अध्ययन करके विचारों की एक अनोखी लैब तैयार की है। इसे नाम दिया है 'थॉट लैब'। जैसे बाहरी लैब में अलग-अलग कैमिकल को मिलाकर एक नया कैमिकल तैयार किया जाता है, वैसी ही इस लैब में किसी भी विचारधारा के विद्यार्थी के विचारों का परिवर्तन कर सकारात्मक विचारों का सृजन किया जाता है। ये पूरा कार्य एक प्रक्रिया के तहत होता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी को अपनी विचारों की प्रयोगशाला से अवगत कराया जाता है।

शिक्षा प्रभाग के इस अनोखे थॉट लैब प्रोजेक्ट की शुरुआत 20 अप्रैल 2018 में गुरुग्राम की नार्थ कैब यूनिवर्सिटी में की गई। इसे शुरू करने में पालम विहार सेवाकेन्द्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही। लैब में विद्यार्थियों पर किए गए शोध के आश्चर्यजनक चौंकाने वाले परिणाम सामने आए हैं। इससे छात्रों में पहले की अपेक्षा सकारात्मकता बढ़ी है, वहीं उनमें जीवन में बेहतर करने की प्रेरणा आई है। कई विद्यार्थी ऐसे हैं जो पूरी तरह से बदल गए हैं। शोध के दौरान 5-6 विद्यार्थियों के अलग-अलग ग्रुप बनाकर उनकी आदतों व विचारधारा के स्तर को पहचानकर कई प्रयोग गए। इस आधार पर आदत बदलने व सकारात्मक सोच को अपनाने के लिए काउंसलिंग की गई। इससे यूनिवर्सिटी के 500 से अधिक विद्यार्थियों के जीवन में भारी बदलाव आए हैं। वहीं 50 फैकल्टीज को भी लाभ मिला है। लैब में 10 मेडिटेशन एक्सपर्ट ने अपनी सेवाएं दीं। बड़े स्तर पर छात्रों की सोच, व्यवहार व आदतों में आए परिवर्तन से यूनिवर्सिटी प्रबंधन ने खुशी जाहिर करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के इस अनोखे प्रयोग की सराहना की है।

क्या है थॉट लैबोरेटरी?

थॉट लेबोरेटरी एक ऐसी विधा है जिसके जरिए किसी के भी विचारों की क्वालिटी को पहचानकर उसे सकारात्मक विचारों के लिए प्रेरित किया जाता है। केवल प्रेरित ही नहीं बल्कि अगर माता-पिता से अनबन, दोस्तों के बीच मनमुटाव या टीचर के साथ अच्छे संबंध नहीं हैं तो उसके लिए कौन -कौन से विचार जिम्मेदार हैं। उसकी जड़ को समझते हुए उससे निकलने तथा विचारों की क्वालिटी के लिए काउंसलिंग की जाती है। साथ ही मेडिटेशन कराकर श्रेष्ठ संकल्पों के लिए प्रेरित कराया जाता है।

थॉट लैब बनाने का उद्देश्य...

इसका मुख्य उद्देश्य युवाओं को अपने थॉट प्रोसेस से अवगत कराना है। थॉट प्रोसेस से उन्हें यह प्रेरणा मिलती है कि अपने भाग्य के निर्माता हम स्वयं हैं। वह जैसे विचार (सकारात्मक या नकारात्मक) उत्पन्न करते हैं उसी प्रकार की अनुभूति उन्हें होती है। समय के साथ उसी प्रकार का रवैया बन जाता है, इससे वैसे कर्म (अच्छे या बुरे) होते हैं। एक ही तरह के कर्म जो लंबे समय तक किए जाएं उससे आदतों का निर्माण होता है। जिसकी जैसी आदतें होती हैं, वैसा व्यक्तित्व निखरकर आता है। इसी व्यक्तित्व से तकदीर का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया को समझने के बाद विद्यार्थियों को भली-भांति यह ज्ञान हो जाता है कि विचार ही हमारे जीवन को सफल-असफल, अच्छा- बुरा या महान बनाते हैं। जीवन में विचारों का सबसे अहम योगदान है।

ये विधि अपनाई जाती है...

- सबसे पहले थॉट लैब में प्रवेश करते ही विद्यार्थी का पीआईपी मशीन से स्ट्रेस लेवल नापा जाता है।
- बाद में मेडिटेशन कॉमेन्ट्री कराकर नार्मल किया जाता है, ताकि वह शांत तरीके से अपने थॉट और भावनाओं के बारे में बता सके।
- क्लास में ऑडियो-विजुअल के माध्यम से हर विद्यार्थी को वास्तविक अनुभव कराया जाता है ताकि वह उसे अपनी निजी जिंदगी से जोड़ कर समझ सकें।
- रोजाना की दिनचर्या में आने वाली परिस्थिति और उनके समाधान के बारे में ट्रेनिंग दी जाती है ताकि वह बेहतर हल तलाश सकें।
- लैब में विद्यार्थियों को मोटिवेशनल ऑडियो-वीडियो दिखाकर ग्रुप डिस्कशन किया जाता है।
- 5-6 विद्यार्थियों का एक ग्रुप बनाकर छात्रों से थॉट लेवल के फॉर्म भराए जाते हैं कि कौन सा थॉट कितने देर तक रहता है। फिर उसी अनुसार उनके साथ इंटरेक्टिंग सेशन आयोजित किए जाते हैं।
- मेडिटेशन रूम, लाइब्रेरी कम रिसर्च रूम, एक्टीविटीज कार्नर, फोटो गैलरी और काउंसलिंग से एक-एक छात्र का परीक्षण कर उनके सोच के स्तर को सकारात्मक बनाने के प्रयास किए जाते हैं।
- इस पूरी प्रक्रिया में मेडिटेशन का अहम रोल होता है जो नवीन विचारों का सृजन करने, मन को शांत करने और सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विद्यार्थियों के अनुभव

सकारात्मक सोच के प्रयोग से हमारी टीम जीती मैच

कुछ समय पहले कॉलेज में फुटबाल टूर्नामेंट हुआ था। हमारी टीम ने पहला मैच बहुत अच्छा खेला और जीत गए। दूसरा मैच एक स्ट्रांग टीम के साथ था। इससे पूरी टीम भयभीत हो गई और सबके मन में नकारात्मक सोच चलने लगी कि हम मैच हार जाएंगे। जब खेल शुरू हुआ तो देखा कि हमारी टीम छोटी-छोटी गलती से हार रही है। ब्रेक होने पर मैंने सबको समझाया कि हमारा थॉट प्रोसेस गलत है। हमारी हार का कारण हमारी नकारात्मक सोच है। हम सबने तय किया कि हम सोचेंगे की हमारी जीत निश्चित है। टीम में सभी खिलाड़ियों में नया जोश आ गया और हमारी टीम ने बहुत बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए मैच जीत लिया।

विकास लोहिया, विद्यार्थी, बीकाम, नार्थ कैब यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम

थॉट लैब ने बदल दी जिंदगी की दिशा, क्रोध हुआ शांत

एक दिन कॉलेज के लिए लेट हो रही थी तभी एक बाइक वाले ने मेरी कार को टक्कर मार दी और शीशा टूट गया। पहले मुझे लगा कि उसे थप्पड़ मार दूं फिर मैंने अपना विचार बदला और सोचा कि वो भी एक इंसान है और उससे भी गलती हो सकती है। उसने तुरंत माफी मांगी और मैंने उसे ध्यान से गाड़ी चलाने को कहा। वो मेरा बर्ताव देखकर खुश हुआ। मुझे भी अपने इस बर्ताव से खुशी मिली। उसके बाद जब मैं क्लास में लेट पहुंची और टीचर से माफी मांगी तो उन्होंने भी मुझे अटेंडेंस दे दी। अगर सुबह उसे थप्पड़ लगा देती तो मेरी पूरी विचारधारा नकारात्मक हो जाती। थॉट लैब ने मेरी जिंदगी बदल दी।

रितिका ठाकुर, विद्यार्थी, नार्थ कैब यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम

अपनी विशेषताओं का पता चला, आत्म विश्वास बढ़ा

कॉलेज की सहेली को बहुत अकेलापन महसूस होता था। वो किसी के साथ अच्छी तरह से बात भी नहीं कर पाती थी और ना ही दूसरे विद्यार्थियों के साथ मिलती-जुलती थी। एक दिन उससे परेशानी का कारण पूछा तो बताया कि मुझे 'हिचक' होती है। उसमें असुरक्षा का भाव था। मैंने थॉट प्रोसेस का प्रयोग किया हुआ था तो सहेली को सुझाव दिया कि वो नकारात्मक चिंतन को छोड़ अपनी विशेषताओं पर ध्यान दे और उन पर गर्व करे। उसने मेरे सुझाव को स्वीकार किया। अब वह अपने जीवन में बहुत खुश है और सबसे मिल-जुलकर रहती है।

पूजा बत्रा, विद्यार्थी, नार्थ कैब यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम

थॉट लैब सकारात्मक बदलाव लाने का बेहतर तरीका

थॉट लैब एक ऐसी प्रयोगशाला है जो बच्चों को समझने और उनमें सकारात्मक बदलाव के लिए बेहतर तरीका है। इसकी शुरुआत में उम्मीद नहीं थी कि इतना अच्छा रिजल्ट आएगा। लेकिन बच्चों ने इसमें इतनी बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी निभाई कि अब छात्रों की जिंदगी बदलने लगी है। थॉट लैब से बच्चे अपने आप को बेहतर बनाने में जुटे हैं।

बीके सुदेश, निदेशक, थॉट लैब, नार्थ कैप यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

परमात्मा पिता का सपूत बन सबूत देने वाला बनना है

शिव आमंत्रण » आबू रोड। भोलानाथ बाबा कितना प्यारा लगता है। ज्ञान का सागर है लेकिन बड़ा प्यारा भोला लगता है। ज्ञान हमको प्यारा भोला बनाता है। इनोसेन्ट माना भोला, व्यर्थ से जानते ही नहीं हैं। ऐसे भोलेनाथ बाबा जैसा बनना है तो ईश्वरीय संतान हूँ, इतना शुद्ध नशा हो। बुद्धि को व्यर्थ सोचने का जैसे अक्ल ही न हो, अविद्या। जो हमारे योग्य अच्छाख्याल हो वही सेवार्थ आये। जो सपूत बन सबूत देने वाले बच्चे हैं, जो आदि से भूले नहीं हैं कि बाबा को क्या रिटर्न दूं। बाबा आपने कितना दिया है। बाबा देता ही रहता है तो क्या रिटर्न देवें। बाबा कहता रिटर्न है अपने को टर्न कर लो। अपनी कमजोरी के सिर काट लो, खत्म कर दो। जो कमजोरी दिल-दिमाग में आती है, जो सर्वशक्तिमान के बच्चे होकर भी हमें संपन्न संपूर्ण बनने नहीं देती है, उसे खत्म कर संपूर्ण बनकर दिखाओ। बाबा से जो इतना खजाना मिलता है उसमें संपन्न रहो। कभी कमी महसूस न हो। जो जैसी बात सामने आए, सहजयोगी बन सर्व से स्नेही रह करके पार कर लो। उसके लिए अपने आपको सरल स्वभाव वाला बनाना होता है। योगी के स्वभाव में सरलता आएगी, बोल यथार्थ होंगे। एक भी अयथार्थ शब्द भाषा में मिक्स न हो। हमें पक्का सच्चा योगी बनना है- यही तात लगी रहे हमारे संकल्प, बोल कर्म पर बहुत ध्यान हो। निरन्तर ऐसा ध्यान रहे। कभी किसी बात में अन्दर इन्टरफेयर नहीं करें। समझ कहती है तुम दिखावा मत करो। समझ कहती है जितना तुम गंभीर, सयाना बनेंगे उतना आपकी जहां जरूरत होगी वहां बाबा लाएगा। अगर यह ख्याल आता है कि मेरे को आगे रखा जाए- तो यह ख्याल भी योगी बनने नहीं देता। योगी बनने के लिए पहले अपने पास लिस्ट निकालें। पक्का योगी बनने के लिए अन्तर्मुखता तो बहुत आवश्यक है ही, एकान्तप्रिय रहना भी आवश्यक है। परंतु वह स्वाभाविक बन जाए। बाह्मुखता में आने का जैसे उसको अक्ल ही नहीं है। रूखापन भी नहीं हो, अन्तर्मुखता हमको साइलेंस में लेकर जाती है, सयाना, गंभीर बनाती है। परचिंतन में नहीं आने देती है। स्वचिंतन करना अच्छा लगता है। बाबा से लिंक जुड़ा रहे और देही-अभिमानी स्थिति मजबूत हो, वह अवस्था जमानी पड़ती है। मम्मा बाबा को देखा है - कारोबार कितनी भी हो लेकिन सूरत कैसी है। हम बच्चों के मां-बाप हैं, हमारा सब ध्यान रखते हैं लेकिन सूरत-मूरत कैसी है, यही पालना दी है। बाबा-मम्मा की यही इच्छा है हम योगी होकर रहें, ज्ञानी तू आत्मा, बाबा के प्यारे बच्चे होकर रहें। अच्छी तरह से पुरूषार्थ करने वाला तो देगा ही। हम ऐसे नहीं कहेंगे यह क्यों देता है, इसका दोष नहीं, समझ की कमी है। मैं तो मास्टर दुःखहर्ता, सुख दाता हूं। दुःख लिया नहीं, उसने जो दुःख दिया वह खत्म हो गया। रिटर्न में मैंने सुख दिया। बाबा ने हमारे अंदर का इतना दुःख ले लिया है, जो दुःख देने की आदत छोड़ दी है। दुःखहर्ता-सुखकर्ता बाबा आया है हम बच्चों को सदा के लिए सुखधाम का मालिक बनाने। तो हमारे सामने कोई कितना भी दुःख देने वाला आए, उसका दोष नहीं। बाबा ने हमारा दोष नहीं देखा, दुःख लेकर सुख भर दिया। तो योगी माना सबका दुःख समा लिया और रिटर्न में जो सुख मिला है वह दिया। कोई आत्मा के पास इधर-उधर का बहुत किचड़ा भर जाता है, जैसे सागर में कोई ने किचड़ा फेंका, सागर ने फेंक दिया। हमारे पास ज्ञान किसलिए है? अंदर जाएगा ही नहीं, बाहर फेंक देंगे। रिटर्न में देंगे मीठी शीतल लहरें। कोई एक मास भी अच्छी तरह योग लगाए तो विकर्म विनाश हुए पड़े हैं। जैसे माचिस की तीली लगाओ तो सब खत्म। सिर्फ किचड़े को एक कोने मे रखकर आग लगाओ। मुझे विकर्माजीत बनना है, यह धुन लगी रहे। जैसे पागल को धुन लगती है तो वही बात करता है। हम भी पागल हुए हैं। हमें भी यही करना है। विकर्माजीत बनना है तो सारे किचड़ों को रखो कोने में। कोई विकर्म हो नहीं सकता। इन पुरानों का करो विनाश तो खाद भी निकल जाए। फिर सच्चाई की फीलिंग आएगी। कहेंगे यह बहुत सच्चे हैं। ऐसे नहीं, ज्ञान सुनना अच्छा लगे, लेकिन कहें इसके बोल में जरा भी हेर-फेर नहीं है। कभी यह झूठ बोल नहीं सकता। झूठ देह-अभिमान सिखाता है। बात को बढ़ाना-चढ़ाना सिखाता है लेकिन जितनी देही-अभिमानी स्थिति है तो झूठ निकलता जाता है।

- क्रमशः...

बच्चों को राजयोग का ज्ञान बचपन से दिया जाए, युवा इसे व्यायाम की तरह दिनचर्या में शामिल करें: विधायक

शिव आमंत्रण » आबू रोड। बिना नेता के समाज नहीं होता और नेता के लिए समाज का होना आवश्यक है। वह अपने सहज स्वभाव, कुशल वक्ता, सेवक तथा अपनी सामाजिक उपयोगिता के कारण माननीय होता है। देश तथा समाज का उत्थान नेता पर निर्भर करता है। नेता यदि पथ भ्रष्ट हुआ तो देश और समाज भी पतन की ओर अग्रसर हो जाता है। वर्षों तक हमारी कई परेशानियों की जड़ हमारा गलत नेता ही है। प्राचीन भारतीय संस्कृति ने बहुत सोच समझकर नेता की व्याख्या की थी जो व्यक्ति नीति का पालन करे और चलाए वही नेता होगा। इसलिए अपने समाज में उन्नति लाने के लिए ऐसे नेता का चुनाव करना चाहिए, जिसके अंदर समाज और देशहित में उनकी भावनाएं कर्मठ, सुयोग्य, सहयोगात्मक एवं जिम्मेदार हों तभी हम उनको अपना नेता चुनें। ऐसे ही एक 2016 में चुने गए नेता जो मंगल डे विधानसभा क्षेत्र, जिला धरम, असम राज्य के 42 वर्षीय विधायक गुरु ज्योतिदास जो अपने राजनीतिक जीवन में सामाजिक सेवाओं का अनुभव ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय स्थित शिव आमंत्रण पत्रिका से खास बातचीत के दौरान साझा किया, जो उनके ही शब्दों में वर्णित है...

शख्सियत

राजनीति से सामाजिक बदलाव संभव...

चर्चा में विधायक गुरु ज्योतिदास ने कहा कि बीकॉम की पढ़ाई पूरी करके एक एनजीओ ज्वाइन किया, उसके बाद स्कूल में काम किया। राजनीति में 2013-2014 में आया। मंगल डे विधानसभा का 2016 से विधायक हूं। कम उम्र में राजनीतिक जीवन में आना नहीं चाहता था लेकिन सामाजिक विवशता के कारण मेरा मन बदल गया। ऐसा लगा कि समाज के प्रति जो कुछ करना है उसे राजनीति में आकर ही पूरा किया जा सकता है। राजनीति की बात अगर हम छोड़ दें तो सभी धर्म-सम्प्रदाय के प्रति मेरा नजरिया समभाव का है।

पार्टी धर्मनिरपेक्षता की ओर बढ़ी...

उन्होंने कहा कि वोट की राजनीति का जहां तक प्रश्न है तो भाजपा के संबंध में लोगों का यह विश्वास था कि यह हिन्दू धर्म में ज्यादा विश्वास रखता है जो अब धीरे-धीरे खत्म होकर धर्मनिरपेक्षता की ओर बढ़ा है। भाजपा के शासनकाल में जब से प्रधानमंत्री मोदीजी हैं तब से सबका साथ सबका विकास हुआ है। हर महिला की इज्जत बचाने के लिए खुले में शौच की परम्परा को खत्म किया गया, जिसकी सराहना पूरे देश में काफी की गयी।

> आध्यात्मिक व्यक्ति किसी भी तरह के अपराध करने से प्रायः अलग होता है, वे हमेशा समाज में शांति की बात करने में विश्वास रखते हैं, जिससे उन्हें सम्मान मिलता है

हमारी संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी है...

सनातन हिन्दू धर्म में पैदा होने के वजह से शिव, विष्णु, राम, कृष्ण आदि सब में मेरी मान्यता है। हमारे देश में जो संस्कृति है वह हजारों वर्ष पुरानी है जो हमारे पूर्वजों के समय से है। यह एक विश्वास है कि भगवान दुनिया को चलाता है। मैं नियमित रूप से पूजा-पाठ के साथ ध्यान-साधना भी करता हूं। मानव के कल्याण के लिए ध्यान तपस्या तो हमारे ऋषि-मुनियों ने प्रारंभ की जो हमारे समाज में दया, करुणा, प्रेम और मानवता को बनाए रखने में बहुत ही मददगार है।

मेरा अनुभव कहता है कि किसी भी तरह का ध्यान-पूजा ईश्वर को किसी भी रूप में मानने वाला व्यक्ति प्रायः किसी भी तरह की बुराई और अपराधों से मुक्त होकर रहना चाहता है। जिसके वजह से हमारे समाज में एक प्रकार की सत्यता के साथ निर्भयता, निडरता बनी रहती है। गलत करने से पहले लोग एक बार जरूर सोचते कि भगवान देख रहा है जिससे कुकर्मों में कमी बनी रहती है। मोदी और योगी के आध्यात्मिक और राजनीतिज्ञ व्यक्तित्व से मैं काफी प्रभावित हूं।

असम का एनआरसी मुद्दा

एनआरसी का मुद्दा आज हमारे देश में असम को लेकर जोर-शोर से उठाया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर (एनआरसी) के अंतर्गत जिस व्यक्ति का नाम जांच के बाद पाया जाएगा, उसे ही इस देश मे रहने का हक है। उसे ही देश की संपदा और सुविधाओं पर हक होना चाहिए। जिसका नाम नहीं होगा उसे घुसपैठिया करार देकर देश से निकाला जा सकता है। ऐसे अवैध रूप से देश में रह रहे लोगों के वजह से कई तरह की खतरा उत्पन्न होने की संभावना बनी रहती है। एनआरसी जांच से देश में सुरक्षा और पारदर्शिता बनी रहे, इसके लिए नागरिकता रजिस्टर की जांच-पड़ताल होना आवश्यक है। एनआरसी के जांच से यह पता चला है कि अभी तक करीब-करीब चालीस लाख ऐसे लोग हैं जिनका नाम भारतीय नागरिक रजिस्टर से बाहर है। यदि हमारी सरकार समय रहते ऐसे लोगों पर कानूनी कार्रवाई नहीं करती है तो वह देश के लिए वाकई खतरा साबित हो सकता है।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का मकसद

मंगल डे में ब्रह्माकुमारीज़ का सेन्टर है जहां मुझे वहां की इंचार्ज बहनें बुलाती रहती हैं उन्हीं के संकल्प के वजह से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में मेरा आना हुआ जो आज के दिन मुख्यालय भी पहुंचा हूं। मैं काफी व्यस्त रहता हूं जिसके वजह से ब्रह्माकुमारीज़ के कार्यक्रमों में कम भाग ले पाता हूं। मेरा मन रहता है कि अधिक से अधिक लोगों को इस आध्यात्मिक ज्ञान के साथ जोड़ दूं। राजयोग सीखने के लिए खुद की तरह लोगों भी को प्रेरित करूं। एसेम्बली चुनाव, पंचायत चुनाव और लोक सभा चुनाव आम चुनाव में व्यस्त होकर भी मेरा ध्यान इस ओर उन्मुख रहता है। राजयोग से निश्चिततौर पर लाभ होता है। इसस हमारा मन शांत होने लगता है। साथ ही मन की शक्ति भी बढ़ती है।

आज मनुष्य कुम्भकरण की तरह अज्ञान की नींद में सोया हुआ है...

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में आकर देखा, सब तरफ साफ-सुथड़ा, चाहे वह डायनिंग हो, कचेन हो, जहां देखो वहीं सफाई जो स्वतः किसी का भी ध्यान अपनी ओर खींचता है। आसामी में कहा जाता है कि जहां साफ-सफाई है वहां सबकुछ मिलता है। माउंट आबू ज्ञान सरोवर भी गया वहां कुम्भकरण वाला ज्ञान प्रदर्शनी से मैं काफी प्रभावित हुआ। जहां मुझे यह सीखने को मिला कि सच में आज मनुष्य कुम्भकरण की भांति अज्ञानता की नींद में सोया है। उसे ज्ञान रूपी जल छिड़क कर अज्ञानता के अन्धकार से निकालने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि असम में बोडो, कछारी, करबी, मिरी, मिशिमी, राभा आदि जैसे विभिन्न जनजातियां मौजूद हैं। बीहु नृत्य राज्य की सांकृतिक उत्सव है जो साल में तीन बार मनाया जाता है। हमारा राज्य चाय की खेती और सिल्क के लिए विश्व प्रसिद्ध है। देश का पहला तेल भंडार यहां ही निकला। हमारे यहां का मौसम काफी सुहावना होता है।

ब्रह्माकुमारीज़ नहीं छुड़ाती किसी का घर...

अभी हम इक्कीसवीं सदी में हैं जहां विज्ञान का ही बोल बाला है। जहां हम आध्यात्म को भूल चुके हैं जिसके वजह से हर क्षेत्र में असंतुलन की स्थिति हो गयी है। जब इंसान में मानवता का भाव आएगा तभी दुनिया का कल्याण सही मायने में संभव है। हीरे जैसा बनने के लिए हमें मधुबन के भाई-बहनों से सीख लेनी है, वे न केवल इस देश के लिए बल्कि विश्व के लिए एक उदाहरण हैं, आदर्श हैं। मैं इस आदर्श को लेकर यहां से जाउंगा। यहां से जाने के बाद मैं अपने साथी और विधायक को न केवल बताउंगा बल्कि उन्हें आने के लिए प्रेरणा भी दूंगा। अभी ऐसा देखा जा रहा है कि सेवानिवृति के बाद ही लोग पूजा पाठ में अपना ध्यान देते हैं लेकिन मैं तो यह कहना चाहूंगा कि आध्यात्मिकता का ज्ञान युवाओं को बचपन से ही दिया जाना चाहिए। वे राजयोग को अपने दिनचर्या में व्यायाम की तरह ही जोड़ें। यह न केवल एक व्यक्ति के रूप में बल्कि देश और समाज के भी हित में होगा। इससे एक अच्छी संस्कृति का जन्म निःसंदेह होगा। आज के युवाओं में ब्रह्माकुमारीज़ के संबंध में यह मान्यता है कि यहां का होने से घर-परिवार छोड़ दिया जाता है जबकि मैंने यह देखा है कि यहां ऐसी कोई बात नहीं है। राजनीति में होने से मैं यह कह सकता हूं कि आध्यात्मिक के साथ राजनीतिज्ञ होना आज के समाज में चौमुखी विकास के लिए जरूरी है।

"पुणे के यरवडा जेल में बदलाव की सकारात्मक पहल... चार साल से चल रहा राजयोग मेडीटेशन का प्रशिक्षण

यरवडा जेलः राजयोग से कैदियों का व्यवहार हुआ सकारात्मक, तनावमुक्त-व्यसनमुक्त बने

कारागार बना शांति का सेवाकेंद्र, 98 फीसदी बंदियों की अनिद्रा की शिकायत हुई दूर, व्यवहार व रहन-सहन बदला, सोच में आया भारी बदलाव

यरवडा जेल में ध्यान करते सैकड़ों की संख्या में बंदी भाई।

शिव आमंत्रण यरवडा/पुणे। समाज में अपराधी मनोवृत्ति को बदलने के लिए आज किसी भी तरह का कानून सफल नहीं हो पा रहा है। आज आपराधिक प्रवृति को बदलने के लिए एक शुद्ध स्नेह युक्त विचारधारा से ऐसे लोगों को प्रेरित करने की आवश्यकता है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान अहम भूमिका अदा कर रही है। संस्थान द्वारा पुणे के यरवडा मुख्य कारागृह में पिछले 4 साल से चल रहे आध्यात्मिक ज्ञान व मेडिटेशन के प्रशिक्षण से कारागार का माहौल बदल गया है। अब जेल में प्रातःकाल से ही साधना और राजयोग मेडिटेशन आरंभ हो जाता है। सलाखों के पीछे बंद कैदी राजयोग का अभ्यास कर बेहतर जीवनशैली जी रहे हैं। हजारों कैदियों ने स्वयं का सत्य परिचय जानकर गुनाहों के विचार को त्याग कर दिया है।

ब्रह्माकुमारीज़ यरवडा सेवाकेंद्र द्वारा रोज जेल में सुबह 8.30 से 9.30 बजे तक आध्यात्मिक सत्संग (मुरली) किया जाता है। संस्थान द्वारा इस तरह की सेवाओं के प्रयास से धर्म, प्रांत, जाति, की सीमाएं टूट चुकी हैं। आपराधिक स्वभाव, अच्छे आचरण में बदलने लगा हैं। कैदी व्यसन मुक्त होने लगे हैं। बहुत सारे कैदियों ने अपनी रिहाई के बाद ब्रह्माकुमारीज़ के स्थानीय सेवा केंद्र के निमित्त विद्यार्थी बनकर तन, मन और धन से अपनी हर तरह की सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। साथ में घर गृहस्थी में रहते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की गीता पाठशाला अपने घर में खोल कर औरों का भी कल्याण कर सुखद जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

जेल वार्ड का माहौल बदलकर आध्यात्मिक सेवाकेंद्र जैसा बन चुका है

यरवडा मध्यवर्ती कारागृह पुणे एशिया खंड में सबसे बड़ा कारागृह है। यहां पांच हजार पुरूष कैदी और दो सौ पचास महिला कैदी हैं। इस कारागृह में विचाराधीन बंदियों की संख्या ज्यादा है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कैदियों को कॉमेंट्री म्यूजिक के साथ आध्यात्मिक गीत सुनने के लिए म्यूजिक प्लेयर, सेवन डेज कोर्स चित्र प्रदर्शनी और मेडिटेशन लाइट की भी सुविधाएं प्रदान की गई हैं। जिससे जेल का माहौल ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र जैसा शांतिपूर्ण वातावरण वाला हो चुका है। जहां हरेक गुरूवार को विशेष भोग का कार्यक्रम रखा जाता है। इस जेल में हरेक साल राखी पूर्णिमा को 200 से 250 कैदियों को राखी बांध कर समाज में भाई-चारे से रहने का संदेश दिया जाता है।

2015 से जारी है राजयोग का प्रशिक्षण

150-165 कैदी प्रतिदिन लगाते हैं ध्यान

700 कैदी ने अब तक प्राप्त किया राजयोग का प्रशिक्षण

राजयोग के अभ्यास से मानसिक बीमारी समाप्त

जेल में हर रोज अलग-अलग कॉमेंट्री द्वारा योग लगाने की विधि से कैदियों का मन शांत होने लगा है। उनकी आसुरी वृति बदल कर दैवी वृति बन रही है। अनेक कैदियों को अनिंद्रा की बीमारी के वजह से बहुत दवाई का सेवन कर नींद करना पड़ता था। जबकि अब राजयोग के अभ्यास से 98 प्रतिशत कैदियों को रात में अच्छी गहरी नींद आने लगी है। जो बहुत क्रोधी, चिड़चिड़ा स्वभाव वाले थे वे अब शांति प्रिय बन चुके हैं। किसी भी तरह के गुनाह करने की प्रवृति को उनकी नष्ट हो चुकी है। कुछ कैदी तो मनोरोग से ग्रसित जिंदगी जी रहे थे लेकिन राजयोग के अभ्यास उनकी यह मानसिक बीमारी समाप्त हो चुकी है।

युवा कैदियों के लिए विशेष क्लास का प्रबंध

कारागृह में युवा कैदियों की संख्या ज्यादा है। उनमें परिवर्तन लाने के लिए उनके जीवन में इस तरह से सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है....

- आध्यात्मिका के तरफ ध्यान आकर्षित करवाना।
- आंतरिक शक्तियों को जगा कर मौन का महत्त्व समझाना।
- मन,बुद्धि, संस्कार, स्वभाव, आचरण और चरित्र के बारे में ज्ञान देना।
- प्रवृति का शुद्धिकरण करवा कर आचार-विचार व्यवहार सुधारना।
- मानसिक एकाग्रता को बढ़ाकर स्थाई शांति का अनुभव कराना।

जेल की सेवाओं में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका...

यरवडा ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र के बीके अंबालाल तरवडे, नारायण केंजले, शिवाजी देशमुख, बाला साहेब, रायकर भाई कारागृह में पुरुष कैदियों को आध्यात्मिक ज्ञान, मेडिटेशन, सकारात्मक चिंतन, दृष्टांत द्वारा बदलाव लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जेल में बदलाव की सभी सेवाएं सेवाकेंद्र प्रभारी बीके प्रयागा बहन के मार्गदर्शन व नेतृत्व में सतत् रूप से जारी हैं।

"ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जेल में बंदियों को सकारात्मक जीवनशैली के प्रशिक्षण के बाद से सैकड़ों बंदियों का जीवन व्यसनमुक्त, अपराधमुक्त और विकारमुक्त बन गया है। सैकड़ों बंदियों ने हर तरह की बुराईयों से दूर रहने की प्रतिज्ञा ली है। जेल में आए इस बेहतर बदलाव के लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का आभारी हूं।

यूटी पवार, जेल अधीक्षक, मध्यवर्ती कारागार, यरवडा, पुणे

"जब से यरवडा जेल में सेवा शुरू हुई है तब से कैदियों में बहुत सकारात्मक बदलाव आया है। उनके मन में बदले की भावना जहां खत्म हुई है वहीं व्यसन करना छोड़ दिया है। साथ ही व्यवहार बदलने से जेल के माहौल में भारी बदलाव आया है। इस बदलाव के पीछे परमात्म शक्ति के साथ राजयोग मेडिटेशन और अध्यात्मिक ज्ञान का कमाल है। इसमें जेल अधीक्षक और जेल कर्मचारियों का भी सराहनीय योगदान है।

बीके प्रयागा, सेवाकेंद्र प्रभारी, ब्रह्माकुमारीज़, यरवडा

"समाज में ज्यादातर लोग जेल में रहने वाले कैदियों को अलग नजर से देखते हैं। लेकिन देखने में यह आया कि परमात्मा और राजयोग से जुड़कर कैदियों में जो परिवर्तन आया है वैसा परिवर्तन आज तक किसी ने भी नहीं किया। जेल में प्रतिदिन सबेरे 3:30 बजे उठकर कैदी भाई और कैदी माताएं प्रभू प्रेम में लीन हो जाती हैं। जो भी कैदी जेल से छूटकर जाते हैं। उन्होंने बदले की भावना छोड़कर एक विश्व कल्याण, शांतिमय जीवन जीने का मार्ग अपनाया है। यह हमारे देश के लिए गौरव की बात है।

बीके आस्था, राजयोग शिक्षिका, यरवडा

"जेल में महिला बंदियों की सेवा करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। बहुत सारी माताओं-बहनों को तनाव डिप्रेशन से बाहर निकालना, परमात्मिक शक्ति से भर कर उन्हें आशावान बनाना एक अनोखा कार्य जेल के अंदर हो रहा है। महिला बंदियों के अंदर बदले की भावना, आपराधिक वृत्ति बदल रही है। साथ ही खुद में दैवी गुण धारण कर जीवन में भारी बदलाव कर रही हैं।

बीके मीरा माता, सेवाधारी, यरवडा

"कारावास में बंदी पराधीनता में जकड़ा रहता है। घर परिवार से अलग रहने से ज्यादातर बंदियों में मानसिक तनाव रहने लगता है। ऐसे में उन्हें सकारात्मक मोटिवेशन की बहुत जरूरत होती है। इस परिस्थितियों के बीच ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशिक्षण से सैकड़ों बंदियों के जीवन में भारी बदलाव आया है, वे पूरी तरह से बदल गए हैं। सैकड़ों बंदियों ने व्यसनमुक्त रहने की प्रतिज्ञा की है। ब्रह्माकुमारीज़ के प्रयास बहुत सराहनीय हैं।

जीके सरोदे,
जेल तुरंग अधिकारी, मध्यवर्ती करागार, यरवडा

महिला बंदियों में आए सकारात्मक बदलाव को देखकर अचंभित हूं

नियमित आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से जीवन को मिली है नई दिशा की ओर बढ़ाने का एक अनोखा अवसर जिससे जीवन बदल रहा है

शिव आमंत्रण यरवडा (महाराष्ट्र)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र द्वारा यरवडा मध्यवर्ती कारागृह में बहनों और माताओं द्वारा महिला बंदियों को राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण विशेष रूप से दिया जा रहा है। इसमें सेवाकेंद्र की इंचार्ज बीके प्रयागा बहन, बीके आस्था बहन, बीके मीरा माता, बीके वर्षा माता, बीके केंजले माता, कारागृह में जाकर महिला बंदियों को आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग मेडिटेशन, सकारात्मक चिंतन और मुरली महावाक्य द्वारा हरेक आत्मा में बदलाव लाने के लिए जी जान से जुटी हुई हैं। आध्यात्मिक ज्ञान का ही नतीजा है कि आज जेल वार्ड में महिला बंदी प्रातः काल से ध्यान में मग्न होकर ज्ञान गंगा में डुबकी लगाती हैं जो पहले पश्चाताप की आग में झुलस रही होती थी वह अब प्रभू प्यार में मग्न होकर खुशी-खुशी जेल में समय गुजार रही हैं। जो हुआ अच्छा हुआ का पाठ पक्का कर जेल में औरों के लिए भी मिसाल पेश कर रही हैं। मानो उनको इस ज्ञान के रूप में जैसे भगवान मिल चुका है, ऐसा वह सब महसूस करती हैं। जेल में महिला कैदियों की संख्या करीब 250 है। जिसमें से वहां सैकड़ों महिला कैदियों को ब्रह्माकुमारीज़ का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स कराया गया। करीब 35 से 45 महिला कैदी आध्यात्मिक क्लास करके अपने जीवन में एक अनोखा परिवर्तन ला रही हैं। उन्हें शास्त्रों का भी आध्यात्मिक रहस्य सुना कर उनके जीवन में खुशियों की बहार लाने का प्रयास किया जा रहा है। उनके जीवन में जो गलतियां हो गई हैं वह दोबारा ना हो इसकी जानकारी अनेक दृष्टांत देकर समझाया जाता है। उनकी बदला लेने की भावना बिल्कुल बदल गई है। महिला कारागृह में भी पिछले 4 साल से राजयोग का प्रचार जारी है। जहां के जेल अधीक्षक यूटी पवार की सहयोग और प्रेरणा से महिला कारागृह में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा खास कर महिला बंदियों को राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है वह काबिले तारीफ है। जहां नियमित आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से जीवन को एक नई दिशा की ओर बढ़ने का महिलाओं को अनोखा अवसर प्राप्त हो रहा है। अपराधी प्रवृति की महिला बंदियों में भी एक गजब प्रकार की दैवीय गुण उभरता हुआ देख मैं अचंभित रह गया। मैंने महसूस किया कि अब इस धरा पर स्वर्णिम संसार आने से कोई नहीं रोक सकता है। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से हो रहा यह पहल बेहद ही खास है। उसके लिए इस संस्थान को मैं तहेदिल से धन्यवाद देना चाहता हूं और साथ में जितने भी लोग सहयोगी बनें हैं वे सब धन्यवाद के पात्र हैं। आइए हम खुद को बदल समाज बदल डालें।

बीके अंबालाल तरवडे
इंजीनियर, यरवडा, पुणे

येरवडा जेल में महिला कैदियों को ज्ञान से संबोधित करते बीके सदस्य।

संपादकीय

एक बार फिर दुनिया ने देखी योग की शक्ति

योग और राजयोग के प्रयोग का असर अब सब जगह दिखने लगा है। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस भले ही पिछले चार वर्षों से मनाया जा रहा है। लेकिन राजयोग जिससे आत्मा और शरीर दोनों का ही सर्वांगीण विकास होता है। उसे पिछले 83 वर्षों से मनाया जा रहा है। वैसे तो राजयोग को लोग अलग-अलग स्तर से परिभाषित करते रहे हैं। लेकिन वास्तव में जिस तरह से राजयोग से पिछले आठ दशकों से लाखों लोगों ने अपने जीवन को बदला है। वह एक मील का पत्थर साबित हुआ है। अब तो योग के प्रति भी लोगों का रूझान तेजी से बढ़ा है। इसके फायदे भी दिखने लग गए हैं। अब धीरे-धीरे लोगों के जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है। परंतु शरीर की स्वस्थता के साथ मन की स्वस्थता आए यही लक्ष्य होना चाहिए। इसी लक्ष्य के साथ यदि प्रत्येक व्यक्ति योग और राजयोग को जीवन में अपनाए तो निश्चिततौर पर सर्वांगीण विकास होगा।

मेरी कलम से

प्रो. दिनेश डांगे]
यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'

हिम्मते मर्दा, मददे खुदा- कहा जाता है। जिसके पास खुद की हिम्मत नहीं होती उसकी भगवान भी मदद नहीं कर सकता। कुछ लोग परिस्थिति का मुकाबला करने से पहले ही हार मानते हैं। जीत और हार मन की वजह से ही होती है। बहुत सी बीमारियां तो मनुष्य के संकुचित और नकारात्मक विचारों से उत्पन्न होती हैं। अब मैं इस बीमारी से ठीक नहीं हो पाऊंगा। अब मेरा कुछ अच्छा होने वाला नहीं हैं। ये नकारात्मक विचार जब मन में आने लगते हैं। तब दवा भी काम नहीं करती। सकारात्मकता ही हमारी सच्ची मानसिक शक्ति है। इसी शक्ति की वजह से मनुष्य की जीत होती है और इसी शक्ति के अभाव में मनुष्य की हार होती है। इसलिए तो परम आदरणीय राजयोगिनी दादी जानकी जी कहती हैं हमारे नकारात्मक विचार अग्नि के समान होते हैं। जो अंदर की मानसिक शक्ति को जलाकर खाक करते हैं। इसलिए हमें मन की हार को होने नहीं देना चाहिए। मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। इसे जीवन का संकल्प बना लें।

15 साल पहले की एक घटना है। नदी में बाढ़ आयी थी और एक प्राइवेट बस सड़क से फिसलकर नदी में गिर गयी। डर के मारे यात्री चिल्लाने लगे। उनमें से एक औरत तैरकर किनारे आयी। बाद में उसके ध्यान में आया कि वह तैरना जानती ही नहीं थी। परन्तु मन की जबरजस्त इच्छा शक्ति से यह संभव हुआ। दूसरी एक घटना और दिलचस्प है। एक गांव में पहाड़ पर चढ़ने की प्रतियोगिता थी। भीड़ काफी जमा हुई थी। चढ़ाई इतनी आसान नहीं थी। लोग समझने लगे कि यह प्रतियोगिता कोई जीत नहीं पाएगा। कहने लगे यह तो नामुमकिन है। कोई थोड़ा फासला चढ़कर पीछे लौटता, तो कोई अपना संतुलन खोकर गिर पड़ता। पर एक युवक बार-बार गिरकर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। लोग चिल्लाते थे लौट पीछे, क्यों अपनी जान खतरे में डाल रहा है? फिर भी वह चढ़ता ही जा रहा था। आखिर में उसने अपनी चढ़ाई पूरी की। वह विजयी हुआ। सब आर्श्चचकित हुए। उन्होंने उसे पूछा, कहां से मिली तुम्हें इतनी शक्ति? कैसे यह मुश्किल काम तुमने पूरा किया? तब पीछे से आवाज आयी। अरे वो तो बहरा है। उसे कुछ सुनाई नहीं देता। यदि उसे सुनाई देता तो उसे सारे नकारात्मक विचार ही सुनने को मिलते। वह बहरा था। इसलिए जीत सका। अतः नकारात्मक विचारों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। सुनकर भी अनसुना करना चाहिए।

बोध कथा | जीवन की सीख

भाग्य और कर्म दोनों का रिश्ता बहुत गहरा है

कर्मवादी लोग कहते हैं भाग्य कुछ नहीं होता, भाग्यवादी लोग कहते हैं किस्मत में लिखा ही होता है, कर्म कुछ भी करते रहो। भाग्यवादी और कर्मवादी लोगों की यह बहस कभी खत्म नहीं हो सकती। लेकिन यह भी सत्य है कि भाग्य और कर्म दोनों के बीच एक रिश्ता जरूर है। कर्म से भाग्य बनता है या भाग्य से कर्म करते हैं लेकिन दोनों के बीच कोई खास रिश्ता जरूर होता है। भाग्य और कर्म के बीच के इस रिश्ते को समझने के लिए यह कथा बहुत ही अच्छा उदाहरण हो सकती है। कहते हैं एक बार ऋषि नारद भगवान विष्णु के पास गए। उन्होंने शिकायती लहजे में भगवान से कहा पृथ्वी पर अब आपका प्रभाव कम हो रहा है। धर्म पर चलने वालों को कोई अच्छा फल नहीं मिल रहा, जो पाप कर रहे हैं उनका भला हो रहा है। भगवान ने कहा नहीं, ऐसा नहीं है, जो भी हो रहा है, सब नियती के मुताबिक ही हो रहा है। नारद नहीं माने। उन्होंने कहा मैं तो देखकर आ रहा हूं, पापियों को अच्छा फल मिल रहा है और भला करने वाले, धर्म के रास्ते पर चलने वाले लोगों को बुरा फल मिल रहा है। भगवान ने कहा कोई ऐसी घटना बताओ। नारद ने कहा अभी मैं एक जंगल से आ रहा हूं, वहां एक गाय दलदल में फंसी हुई थी। कोई उसे बचाने वाला नहीं था। तभी एक चोर उधर से गुजरा, गाय को फंसा हुआ देखकर भी नहीं रुका, उलटे उस पर पैर रखकर दलदल लांघकर निकल गया। आगे जाकर उसे सोने की मोहरों से भरी एक थैली मिल गई। थोड़ी देर बाद वहां से एक वृद्ध साधु गुजरा। उसने उस गाय को बचाने की पूरी कोशिश की। पूरे शरीर का जोर लगाकर उस गाय को बचा लिया लेकिन मैंने देखा कि गाय को दलदल से निकालने के बाद वह साधु आगे गया तो एक गड्ढे में गिर गया। भगवान बताइए यह कौन सा न्याय है। भगवान मुस्कुराए, फिर बोले नारद यह सही ही हुआ। जो चोर गाय पर पैर रखकर भाग गया था, उसकी किस्मत में तो एक खजाना था लेकिन उसके इस पाप के कारण उसे केवल कुछ मोहरे ही मिलीं। वहीं उस साधु को गड्ढे में इसलिए गिरना पड़ा क्योंकि उसके भाग्य में मृत्यु लिखी थी लेकिन गाय के बचाने के कारण उसके पुण्य बढ़ गए और उसे मृत्यु एक छोटी सी चोट में बदल गई। इंसान के कर्म से उसका भाग्य तय होता है। अब नारद संतुष्ट थे।

संदेशः हमारे कर्मों के हिसाब-किताब का खाता पीछे के जन्म से चला आता है जिसके वजह से हमारे वर्तमान जीवन में अचानक सुख-दुःख की स्थिति उभर आती है इसलिए सदा हमें अच्छे और श्रेष्ठ कर्मों पर ही ध्यान देना चाहिए।

लक्ष्य, विश्वास और क्रिएटीविटी से भाग्योदय

आध्यात्म की नई उड़ान...

डॉ. सचिन]
मेडिटेशन एक्सपर्ट

अब हमें अपने जीवन में एक क्षण रुक कर आत्म विश्लेषण करने की जरूरत है। बाहर से डिस्कनेक्ट होकर अंतर्मन में देखने की जरूरत है। जीवन के इस अनंत यात्रा में स्वयं को देखें कहीं सो तो नहीं रहा हूं या जाग रहा हूं? किस ओर भाग रहा हूं? बचपन में क्या स्वप्न संजोए थे? कहीं जीवन की यात्रा में भटक तो नहीं गया हूं? चेक करें।

भाग्य हमारे वश में है क्योंकि भाग्य लिखने की कलम भाग्य विधाता परमात्मा ने हमारे हाथ में दी है। हमारे भाग्य का कलम किसी और के हाथ में नहीं हो सकता क्योंकि हम अपना भाग्य हर रोज खुद ही लिख रहे हैं और जैसा लिखना चाहें वैसा लिख सकते हैं। इस लेख में आप भाग्य से संबंधित अंग्रेजी के 26 अक्षर के अनुरूप 26 बातें क्रमशः देखेंगे। इनमें से अगर एक भी बात जीवन में धारण कर ली जाए तो बाकी की 25 बातें पीछे-पीछे आ जाएंगी। वो बातें इस प्रकार हैं....

ए फॉर एम मतलब लक्ष्य

हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है? पैसा कमाना, शोहरत कमाना, रिलेशनशिप, सोशल लाइफ, इंटरनल हैप्पीनेस या कुछ और? जोशुआ लिबमन अमेरिका का प्रसिद्ध व्यक्तित्व जो वो जब जवान था तो उसने एक लिस्ट बनाई थी कि मुझे अपने जीवन में क्या चाहिए? लिस्ट में सब कुछ लिखा उसने जैसे फैमिली, वाइफ, बच्चे, वेल्थ, हैप्पीनेस, होम ये सारी लिस्ट बना दी। उसी के शहर के बाहर एक फकीर रहता था उसको जाकर दिखाया ये मैंने लिखा है मेरे जीवन का लक्ष्य। तो उस व्यक्ति ने उस लिस्ट को देखते ही कट लगा दिया और लास्ट में सिर्फ एक ही चीज लिखी पीस ऑफ माइंड।

ये नहीं मिला तो सब व्यर्थ है। इसी जोशुआ लिबमन ने बाद में एक किताब लिखी पीस ऑफ माइंड जो कि वर्ल्ड फेमस हुई। जीवन का लक्ष्य क्या है ऐसे ही भागते जाओ, भागते जाओ और हाथ में कुछ भी नहीं लास्ट में। सब खड़ा है आंखों के सामने लेकिन पर सुख नहीं, चैन नहीं, शांति नहीं, अजीब सी बेचैनी है रात को गोलियां खा-खा कर सोते हैं परंतु फिर भी नींद नहीं है। क्या ऐसी भी स्थिति हो सकती है जब जीवन आनंदमयी हो जाये और हमारा जीवन अपने लिए ना होकर किसी और के लिए हो। ये तो बहुत ऊंची बात है।

पहले अपना जीवन तो खुशहाल बना लें। तो सबसे पहले अगर भाग्य को बनाना है तो पहले भाग्य को निर्धारित करो। लक्ष्य विहीन जीवन कहीं नहीं पहुंचाएगा। अभी इसी वक्त लक्ष्य हो। लक्ष्य ये नहीं आईएएस अफसर बनना, उद्योगपति बनना है, फेमस व्यक्ति बनना है। हमारा लक्ष्य है आंतरिक खुशी, भावनात्मक स्थिरता, लक्ष्य है ऐसा न हो जो मन को खुद को या दूसरों को दोषी ठहराए। इसलिए तो सबसे पहली चीज अपना लक्ष्य तय करो कि संसार जिसको प्राप्ति कहता है वो शायद अध्यात्म में खोना-डूबना है और संसार जिसे अप्राप्ति कहता है वो शायद आध्यात्म में पाना है। ये थोड़ा सा अंतर है। तो थोड़ा गहराई से सोचो मुझे क्या चाहिए? वो शांति हो सकती है, आंतरिक खुशी हो सकती है या संबंधों में मधुरता हो सकती है।

बी फॉर बिलीव मतलब विश्वास

चाहे परिस्थितियां कितनी भी विकराल हों लेकिन खुद में विश्वास हो कि मैं यह फतेह कर सकता हूं। सबसे फिलहाल का उदाहरण हमारे सामने है अरुणिमा सिन्हा जो ट्रेन से जा रही थी ट्रेन से गिर गयी दूसरी ट्रेन ऊपर से चली गयी और पैर कट गया। एम्स में एडमिट थी कितना दिन जो आता था डिप्रेस्ड करके जाता था। लोग कह के जाते थे अब तुम कुछ नहीं कर सकती। वहीं पर उसने संकल्प किया कि नहीं मुझे कुछ करना है और वो माउंट एवरेस्ट चढ़ गई। उसी तरह एक है गुड़गांव की 15 साल की आएशा चौधरी जो अभी 2 या 3 साल पहले उसकी मौत हो चुकी है। बचपन में ऐसी बीमारी के साथ जन्म लिया उसने कई बार एडमिट हुई।15 साल की उम्र में मोटिवेशनल स्पीकर बन गयी। उसकी वीडियोस देखिये वो कैसे बोल रही है वो शक्ति उसमें कैसे आई? 15 साल की लड़की में इतनी पावर जबकि उसको भी पता था कि मैं मर रही हूं। 12 साल की उम्र में ही उसने मोटिवेशनल स्पीच देनी शुरू कर दी थी। उसने एक किताब भी लिखी जो कि उसकी मौत के एक दिन पहले प्रकाशित हुई। उसने सबको सिखाया कि अपने में बिलीव करना सीखो। किसी को दोष ना दो कि उसने ऐसा कर दिया।

एडिसन अमेरिका का फेमस साइंटिस्ट था। 1910 में उसकी पूरी रिसर्च लैबोरेटरी जल गई वो खड़ा हुआ देख रहा था उसका बेटा आया दौड़ा-दौड़ा, कहता ये क्या हो गया? तो उसने बहुत ही पावरफुल वाक्य बोला देखो बेटा हमारी सारी गलतियां जल गई हैं। इतनी बड़ी रिसर्च लैब जिसमें इतने सालों का संसोधन सब कुछ खत्म हो गया और 6 साल के भीतर ही उसने सबकुछ नया बना लिया। खुद पर ऐसा विश्वास था कि कुछ भी हो जाए हिम्मत नहीं हारेंगे। वो पावर कहां से आती है वो पॉवर मेडिटेशन से आती है। वो पावर आंतरिक विश्वास से आती है। खुद को देखने से आती है कि सबकुछ मेरे विरुद्ध है, मैं फिर भी खड़ा रहूंगा।

सी फॉर क्रिएटीविटी

रोज-रोज वही करना सुबह उठना, तैयार होना, ऑफिस जाना सबकुछ वही-वही करना, वही टीवी, वही सोशल मीडिया सबकुछ, रात को फिर सो जाना, फिर सुबह उठना, एक ही तरह का लाइफ स्टाइल बना रहे। कोई भी नई क्रिएटीविटी नहीं है तो जिंदगी बोरिंग बन जाती है। फिर कहां से भाग्य में नया कुछ होवे। फिर भाग्य को दोषी ठहराएंगे मेरे भाग्य में यही था। इसलिए कोई क्रिएटीविटी लाइये। जितने भी संगीतकार हैं, कहानीकार हैं महान कुछ नया क्रिएट करते हुए हैं। एआर रहमान ने एक इंटरव्यू में कहा कि जब मुझे कोई नए संगीत की रचना करनी होती है तो मैं एकांत में चला जाता हूं और ये भूल जाता हूं अभी जो संगीत मैं तैयार करुंगा, उससे कौन सा गीत बनेगा और उसकी कितनी प्रसिद्धि मिलेगी, कितना अवॉर्ड मिलेगा। सबकुछ भुलाकर बस एक ही चीज पर केंद्रित होता हूं कि मुझे कुछ नया करना है और इस तरह नए संगीत की रचना होती है। भाग्य बनाने का एक यह सिद्धान्त क्रिएटीविटी लाना भी है। सुबह उठते ही नवीनता, रचनात्मकता, सृजनात्मकता के साथ कुछ नया करो, न कि उठते ही मोबाइल उठाओ।

आगे हम डी से जेड तक जानेंगे क्रमशः...

प्रेरक विचार
Spiritual THOUGHTS

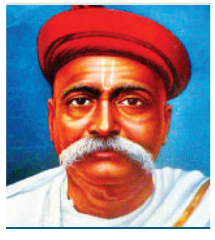

बाल गंगाधर तिलक, स्वतंत्रता सेनानी

"आलसी व्यक्तियों के लिए भगवान अवतार नहीं लेते, वह मेहनती व्यक्तियों के लिए ही अवतरित होते हैं इसलिए कार्य करना आरंभ करें"

मदर टेरेसा, समाजसेवी, भारत रत्न

"हर बार जब आप किसी पर मुस्कुराते हैं तो यह प्यार की कार्रवाई है, उस व्यक्ति के लिए एक सुंदर उपहार और चीज है"

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ
अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

जीवन प्रबंधन

ऑप्शन न ढूंढ एडजस्ट करने की आत्मिक ताकत बढ़ाएं

अधैर्य होने से मन और तन की शक्ति घटती है इसलिए ऑप्शन छोड़ एडजस्ट करने वाले खुद की आंतरिक शक्ति बढ़ाने के साथ औरों की भी शक्ति बढ़ाने में मददगार बनें

शिव आमंत्रण आबू रोड। बहुत प्यार से किसी ने फूल दिया लेकिन उसका कांटा चुभ गया और खून निकल आया। क्या जीवन में कभी ऐसा होता है? देने वाला कहेगा मैंने तो फूल दिए और आपको दर्द हो रहा है, यही जीवन की चेकिंग करनी है जो कुछ सारा दिन हम कर रहे हैं। चाहे वो रिश्ते निभाना, काम करना, कई तरह के कारोबार में हों। हमारे जीवन के फूल जो जीवन को शृंगारते हैं लेकिन चेक करना है वही फूल कमाते-कमाते कोई कांटा तो नहीं लग रहा है। साथ में दर्द तो नहीं हो रहा है। फूल को देखने में और इकट्ठा करने में इतना बिजी हैं कि वो कांटा चुभती जा रही है तो भी उसके लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। क्योंकि हम सब फूल को ही इकट्ठा करने में ही बिजी हैं। इसका मतलब यह नहीं कि मुझे फूल इकट्ठे नहीं करने हैं लेकिन फूल इकट्ठे करते हुए साथ में ध्यान रखना है कि अगर मेरा ध्यान मेरे दर्द की तरफ रहेगा तो वह सारे फूल मुझे खुशी नहीं दे सकेंगे। साथ में कुछ और तो नहीं जो चुभ के दर्द दे रहा है। बाकी अब हमें क्या करना है? इन फूल में से उस कांटा को हटाना है, फूल को नहीं खोना, डरना नहीं है लेकिन फूल के साथ जो लगने वाली चुभने वाली चीज है उसको हटाना है। ताकि सिर्फ फूल नहीं मिले साथ में खुशी मिले, दुआएं मिलें, सुख मिले, सेहत मिले, सुंदर रिश्ते मिलें।

अधैर्य होने से घटती है शक्ति...

वर्तमान समय बाहरी चीजें बहुत बढ़ गई हैं। हमारे जनरेशन में ही फोन का आविष्कार हुआ है और शायद आज हम फोन के बिना एक दिन भी ना बिता सकें। ज्यादातर चीजें जो हमें अपने घर में दिख रही हैं यह हमारे जीवन काल में ही आई हैं। आगे आने वाली जनरेशन को तो पता भी नहीं होगा कि फोन के बिना भी कुछ जीवन होता था। सोचो जब फ्लाइट लैंड करने वाली होती है तो हर कोई क्या कर रहा होता है। उस समय अभी फ्लाइट टच भी नहीं हुई और एयर होस्टेस कहती है रुको-रुको जरा! हम ही वह हैं जो मोबाइल के बिना रहते थे। हम ही वह हैं जो दूसरे शहर में पहुंच कर चिट्ठी लिखते थे कि हम पहुंच गए। लेकिन आज हम फ्लाइट को टच भी नहीं करने देते तो यह प्रॉब्लम फोन की है? नहीं फोन वह फ्लावर है जो हमारे जीवन को सुंदर कंफर्टेबल बनाने आया था लेकिन ठीक से यूज नहीं किया तो यही फोन फिर अधैर्यता क्रियेट कर रही है। कई लोग कहते ये फोन हमें तनाव देता है तो वह फूल ही फिर चुभने लग गया है। लेकिन इसमें फोन का कुछ दोष नहीं। यह तो हमारे ऊपर निर्भर करता है और हम सब इसे ठीक कर सकते हैं। अगली बार जब फ्लाइट से लैंड कर रहें हो तो 10 मिनट तक फोन को ऑन ना करें। दो घंटे पहले फ्लाइट के समय से बैठे हो तो लास्ट दस मिनट में क्या हो जाएगा? लेकिन ये इनर पावर पर डिपेंड करता है कि मुझे अधैर्य नहीं होना है। क्योंकि अधैर्य होने से मेरी आत्मिक और शारीरिक शक्ति घट रही है।

हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनको कंफर्ट के साथ शक्ति दें...

जीवन के हर सीन में चेक करना है कि मेरी शक्ति घट रही है या बढ़ रही है। क्या आपको लगता है कि ऐसे जल्दी-जल्दी फोन ऑन करने से मेरी शक्ति घटेगी? तो एक फोन ऑन करने की प्रोसेस में मेरी शक्ति घट रही है तो इसीलिए लोग कहते हैं जब फोन नहीं था तो हम ज्यादा खुश थे, रिश्ते ज्यादा अच्छे थे। परंतु इसका कारण फोन नहीं बल्कि उसको यूज करने के गलत तरीके से हमने अपनी शक्ति घटाई है। जब शक्ति घटी तो खुशी घटी, रिश्ते बिगड़े तो अब हमें क्या करना है? फोन भी यूज करना है और शक्ति भी बढ़ानी है। हम वो ब्यूटीफुल जनरेशन जिसके पास सुविधाएं भी होंगे और साथ में शक्ति भी होगी। हमारे पहले की जनरेशन के पास सुविधाएं कम थीं लेकिन शक्ति ज्यादा थी। अगर हमने ध्यान नहीं रखा तो हमारे आगे वाली जनरेशन के पास कंफर्ट ज्यादा होंगे, लेकिन शक्ति नहीं होगी। हम सबने एक-एक चीज अपने घर की धीरे-धीरे खरीदी है। पहले साइकिल आया, फिर स्कूटर आया, फिर गाड़ी आई, फिर घर लिया। आज आपके बच्चों को सब कुछ मिल रहा है तो उनको सुविधाएं हैं सब मिलने वाला है। बिना मेहनत किए जिनको सुविधाएं मिलेंगी तो उनकी शक्ति तो वैसे ही कम होगी क्योंकि उनको यह नहीं पता कि बिना सुविधाओं के भी कोई जीवन हो सकता है, इसलिए हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनको सुविधाओं के साथ शक्ति भी दें।

अपने बच्चों को इमोशनली स्ट्रांग बनाना है...

आजकल हर मां-बाप अपने बच्चे को सबकुछ देना चाहते हैं और सबकुछ अच्छा भी देना चाहते हैं लेकिन सबकुछ अच्छा बाहरी तौर पर दे रहे हैं। क्या किसी के जीवन में अगर सबकुछ अच्छा बाहर से होगा तो क्या वह सफल होगा? अगर बच्चे स्कूल में हर साल फर्स्ट आया तो क्या वह जीवन में सफल होगा, क्या यह निश्चित है? लेकिन सही में सफल होने के लिए उस आत्मा के पास इनर पावर होना चाहिए। इनर पावर मतलब एडजस्ट करने की शक्ति, सहन शक्ति, समस्या आने पर स्थिर रहने की शक्ति औरों से प्रेम पूर्वक काम करवाने की शक्ति। तो ये शक्ति है कहां से आने वाली है? पहले खुद में यह शक्ति राजयोग मेडिटेशन से भरकर फिर अपने बच्चों को देनी है। जब भी कोई कहता मेडिटेशन के लिए मेरे पास टाइम नहीं है तो हम उनको यही कहें कि अपने लिए मत करो अपने बच्चों के लिए करो क्योंकि यह वो शक्ति है जो अपने अंदर धारण किए बिना उनको नहीं दी जा सकती है। क्योंकि यह शक्ति खरीदकर नहीं दी जा सकती, बताकर नहीं दी जा सकती, लेकिन खुद में, आत्मा में क्रिएट कर फिर दी जा सकती है। तो हमें अपने बच्चों को इमोशनली स्ट्रांग बनाना है।

आंतरिक शक्ति के साथ हर किसी के साथ एडजस्ट करने की शक्ति बढ़ाएं...

यह समय की पुकार है। इस समय डिप्रेशन रेट हाई है। वर्तमान में औसतन भारत में हर घंटे एक विद्यार्थी आत्महत्या कर रहा है। ये आंतरिक शक्ति की कमी है जो वह सुसाइड कर रहा है या करने की सोच रहा है। वह वो नहीं है जो एग्जाम में फेल हुए हैं। कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने हमेशा अपने स्कूल में टॉप किया था। क्योंकि बाहर की पढ़ाई का और अंदर की शक्ति का कोई कनेक्शन नहीं है। जरूरी नहीं है कि जो क्लास में फर्स्ट आया था उसके पास हमेशा आंतरिक शक्ति हो, कई बार उस बच्चे के अंदर बहुत शक्ति होती है जो पढ़ाई में कमजोर है। कई बार उस बच्चे के अंदर फर्स्ट आने का अटैचमेंट भी ज्यादा होता है। आजकल रिश्ते क्यों बिगड़ रहे हैं? हमारे जमाने में हमारे पास कोई चॉइस नहीं होती थी। हमारे मां-बाप ने जो कहा मुझे यह करना, यह नहीं करना, इससे शादी करनी है हम करते गए, निभाते गए और जब निभाते गए तो हमारे में एडजस्ट की शक्ति आती गई। लेकिन आज जब चॉइस हो गई है तब हम उनको ऑप्शन दे देते हैं कि नहीं निभ रही है तो घर वापस आ जाओ। तो जब से ऑप्शन यूज होने लगा तो धीरे-धीरे यह ऑप्शन ज्यादा हो गया। अब आज से 20 साल बाद के बारे में सोचिए क्या आपको नहीं लगता कि हमें अपने बच्चों को सबसे महत्वपूर्ण चीज क्या देनी है? सिर्फ धन कमाने से बच्चे और परिवार हमेशा सफल रहेंगे? हमें धन के साथ-साथ खुद की और औरों की आंतरिक शक्ति बढ़ाने में मददगार बनना है इसी बात में सब सच्ची सुख, शांति, प्रेम वाला जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य ▶ 110 रुपए
तीन वर्ष ▶ 330
आजीवन ▶ 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▶ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▶ 9414172596, 9413384884
Email ▶ shivamantran@bkivv.org

डॉ. अजय शुक्ला] बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

जीवन का मनोविज्ञान- 14

सामाजिक संदर्भ में चेतन, अवचेतन, अचेतन मन

आध्यात्मिक चेतना के प्रसंग में आत्मिक स्थिति...

स्वयं की स्थिति को उच्च स्वरूप में स्थापित करने की मंसा आत्मा को आध्यात्म की अंतर्यात्रा से जोड़ देती है। जीवन के सामान्य व्यवहार में आध्यात्मिक चेतना के प्रसंग व्यक्ति को आत्मिक स्थिति बनाने में मददगार होते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर जब स्वयं की वास्तविकता का बोध आत्मिक स्थिति के सन्दर्भ में होता है तब आत्मा अपनी मौलिकता का साक्षात्कार स्पष्ट रूप से कर पाती है। आध्यात्मिक चेतना की उपयोगिता का यथार्थ उस समय प्रकट होता है जब ज्ञान, सुख, शांति, आनंद, प्रेम, पवित्रता एवं शक्ति की अनुभूतियां आत्मा के व्यवहार में परिलक्षित होती हैं। जीवन का यह एक दुर्लभ संयोग है कि आत्मिक स्थिति का सन्दर्भ व्यक्ति को पवित्रता की उच्चता से आध्यात्मिक चेतना के प्रसंग में शृंगारित करना चाहता है जिसे धन्यता के भाव से स्वीकारना आत्मा के धर्म का सुखद परिणाम है।

जीवन की श्रेष्ठता से वास्तविक अव्यक्त अवस्था...

निजी जीवन के प्रति संवेदनशील मनोभाव व्यक्ति को श्रेष्ठता के लिए सदा अभिप्रेरणा प्रदान करते रहते हैं। स्वयं को श्रेष्ठ संकल्प एवं श्रेष्ठ विकल्प से सुसज्जित करने की दृढ़ इच्छा शक्ति आत्मा की वह आवाज होती है जिसे सुनने के बाद अनुसरण करना आसान हो जाता है। जीवन को हीरे तुल्य बनाने में दार्शनिक सिद्धांत और आध्यात्मिक व्यवहार का निरंतर अनुकरण करते हुए मंसा को निराकारी, वाचा से निर्विकारी तथा कर्मणा द्वारा निरहंकारी बनना आवश्यक होता है। स्वयं की वास्तविक अव्यक्त अवस्था का बोध व्यक्ति को यह बताता है कि जो कुछ मस्तिष्क से विचार एवं हृदय से भावनाएं उत्पन्न हो रही हैं उसके केंद्र में आत्मा के श्रेष्ठ संकल्प विद्यमान रहते हैं। जीवन की श्रेष्ठता का आत्मिक पक्ष सदा ही अपने गुणों एवं शक्तियों के प्रति निष्ठावान रहकर उन्हें अव्यक्त अवस्था से गतिशील करते हुए दिव्य स्वरूप में परिवर्तित कर देने के लिए पुरुषार्थ करता है।

दार्शनिक सिद्धांत में मानव का नैसर्गिक स्वरूप...

स्वयं का विकास मानवीय प्रवृत्तियों का सबसे अहम पक्ष होता है जिसमें वह जीवन की सरलता को अत्यधिक सहज भाव से आत्मसात कर लेता है। इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत विनम्रता की पूंजी का विशेष योगदान होता है। दार्शनिक सिद्धांत जीवन के मनोभाव को त्याग, तपस्या एवं सेवा के स्वरूप में परोसते हैं लेकिन नैसर्गिक पद्धति से विकास सदैव ही व्यक्ति के लिए आकर्षण का केंद्र रहता है। आत्मिक परिदृश्य में उन्नति के शिखर को प्राप्त करने का आधार व्यक्ति के द्वारा किए गए त्याग का भी त्याग है जो उसे सूक्ष्म अहम से बाहर निकलने में सहायक होता है। जीवन में उच्चता की प्राप्ति हेतु किए जाने वाले पुरुषार्थ अर्थात् तपस्या में मुक्ति और जीवन-मुक्ति की अनुभूति ही आत्मा को कर्मातीत अवस्था तक पहुंचाती है। आत्मा जब ज्ञान, योग एवं धारणा से युक्त होती है तब उससे मन्सा, वाचा एवं कर्मणा द्वारा सेवा स्वतः ही हो जाती है।

ज्ञान के प्रकाश से जीवन की गतिशीलता...

जीवन में सर्व के प्रति समदृष्टि का भाव आत्मिक संबंध की समरसता को आपसी प्रेम एवं सौहार्दपूर्ण स्थितियों द्वारा मैत्रीपूर्ण व्यवहार से निभाने का प्रयास करता है। स्वयं को गतिशील बनाने का पुरुषार्थ करने हेतु ज्ञान की जानकारी प्राप्त कर लेने की सीमा से निकालकर सर्व को स्थानांतरित करके उसे अनुभूति कराने के वास्तविक मानस दर्शन का व्यावहारिक दृश्यांकन है। जीवन में ज्ञान को जानने की क्रिया से आगे बढ़ाने के प्रति निष्ठा व्यक्ति को गतिशीलता प्रदान करती है जिससे वह आत्म बोध की गहनता में उतरता है। स्वयं के द्वारा श्रेष्ठ ज्ञान की स्मृतियां आत्म जगत को प्रकाशित करते हुए जीवन की पवित्र स्थितियों को आदर के भाव से स्वीकार करती हैं। जीवन में ज्ञान का परिमार्जन इतना प्रकाशवान होता है कि वह मानव की गतिशील अवस्था को देव स्वरुप में रूपांतरित कर देता है ।

संवेदना के सत्य में दर्शन एवं आध्यात्म...

आत्मिक कल्याण के परिदृश्य में आध्यात्मिक चेतना से स्वयं को सम्पूर्ण पवित्र स्वरूप में अनुभूति करने का आनंद मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी संवेदना होती है। जीवन की श्रेष्ठता के गतिशील पक्ष सदैव अव्यक्त अवस्था में स्वयं की जीवंतता को आत्मा के गुण एवं शक्तियों द्वारा व्यवहार जगत में उपस्थित होने की अभिलाषा रखते हैं। स्वयं के विकास में आत्मिक स्थिति का सदैव बोध होना मुक्ति एवं जीवन-मुक्ति की उच्चता का आधार है जो कर्मातीत बन जाने के लिए नैसर्गिक मदद प्रदान करता है। ज्ञान का प्रकाश व्यक्ति को उसके स्वरुप अर्थात् आत्मिक समृद्धि से संपन्न बने रहने की निरंतर प्रेरणा देते हुए पुरुषार्थ द्वारा गतिशील रखता है। मानव की संवेदनशीलता आत्मा के विकास एवं कल्याण हेतु सत्य के शोधन में दर्शन और आध्यात्म की उपयोगिता को सदा स्वीकार करती है।

रियल लाइफ

‘आप सौभाग्यशाली हैं कि घर में तपस्विनी हैं’

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमश...

पिछले अंक में एन्टी ओम् मण्डली के डराने धमकाने बहकाने से भी कन्याएं और माताओं पर कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि उनका अडिग विश्वास के साथ परमात्मा में अटूट निश्चय था। अब आगे...

जब शिवरत्न मेहता जी को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने उन माताओं को भीतर बुलाकर भूख हड़ताल का कारण पूछा। माताओं ने बहुत ही अनुनय-विनय करते हुए कहा कि दादा से कहकर हमारी कन्याओं को वापस भिजवा दो। शिवरत्नजी ने दादाजी से बात करके हमें अपने यहां बुलवाया। हमने देखा कि उनका मकान एक बड़े महल की तरह था। क्रोध से उनके नेत्र लाल हो रहे थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही भयंकर था। उन्होंने हमसे न कुछ पूछा, न कुछ कहा बल्कि आज्ञा दी कि हम कन्याओं को हमारी माता के हवाले कर दिया जाए। वे बोले- ‘इन कुमारियों ने अपनी माताओं को बहुत तंग किया हुआ है।’ हमें ऐसा लग रहा था जैसे कि कंस हम कन्याओं को शिला पर पटक कर मार रहा हो। उसके आतंक के कारण हम बाहर उन माताओं के साथ कार में बैठ गईं। परन्तु उस समय हमारी अंतर्रात्मा में आवाज आई कि- “हे शक्तियों, तुम इनसे डरो मत। इनको ईश्वरीय सन्देश देती जाओ, आप ही तो इनके उद्धार के लिए निमित्त हैं।’ अतः हम कार से उतर कर फिर अन्दर गईं। हमने कहा- ‘हमें आपसे एक बात करनी है।’ वे तिल-मिलाकर बोले-‘क्या बात करनी है?’

हमने कहा ‘बाबू जी, आप हमको कहां भेज रहे हैं, हम आपको बताती हैं कि हम यहां पर कैसा जीवन बना रही हैं और इन माताओं के यहां क्यों नहीं जाना चाहती? हमारी आपसे केवल एक ही मांग है वह आपको पूरी करनी होगी। हम कोई सोना-चांदी नहीं मांगते हैं, न ही संसार का कोई अन्य वैभव या सुख-सुविधा मांगते हैं। ये लोग हमें ज्ञानामृत पीने के लिए ‘ओम मंडली’ में जाने की आज्ञा नहीं देती हैं। बाबू जी, हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार करने की बजाय ये हमें बहुत ही बुरी तरह मारती-पीटती हैं। अब भी यहां से ले जाकर खूब मार देंगी और दिलायेंगी। तब क्या आप सहन कर सकेंगे कि आपने अपने हाथों से जिन कन्याओं को इन्हें सौंपा है, उनकी ऐसी हालत हो? देखिए, ये हम पर सितम ढाकर हमारे मुख में अशुद्ध अर्थात् तामसिक भोजन डालने का हेय कर्म भी करती हैं! हमें पकड़ कर सिनेमा ले जाती हैं। हम शान्तिपूर्वक प्रभु की याद में जब कुछ समय घर में बैठती हैं तब यह लोग हमें पीछे से धक्का देती हैं, हमारे संबंधी हमारे बाल खींचते हैं” हमारा यह सब दर्दनाक जीवन-वृत सुनकर मेहताजी के मन में दया की भावना जागृत हुई।

कुछ नर्म स्वर में मेहताजी बोले-‘अच्छा, मैं आप लोगों से एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। मैंने सुना है कि तुम लोग शादी करने से इंकार करती हो।’

मैंने कहा- ‘बाबू जी, ऐसा नहीं है। हम शादी से इंकार नहीं करती। शादी तो श्रीराम ने भी की, श्रीकृष्ण ने भी की, सभी ने की। बाबूजी, बात केवल यह है कि हम विकारी मनुष्य से शादी नहीं करना चाहतीं। हम में से हरेक की इच्छा है कि हम उस पुरूष से शादी करें जिसने आत्म-साक्षात्कार रूपी धनुष को तोड़ा हो और मनोविकारों पर विजय प्राप्त की हो।’

मेहताजी बोले-‘क्या कहा, आत्म-साक्षात्कार रूपी धनुष।’

हमने कहा- ‘जी हां!’

यह बात सुनकर मेहताजी को बहुत खुशी हुई। उनका चेहरा जो पहले तना हुआ-सा लगता था, बदलते-बदलते खुशी से खिल उठा। वह बोले-‘आप छोटी-छोटी कन्याओं की ये बातें सुनकर और आपकी लगन और उत्साह को देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई हैं। आप साक्षात् देवियां हैं। आपके संस्कार मंजे हुए हैं। आपका मन निर्मल है। बस, मैंने समझ लिया है। अरे, आप पर इतना अत्याचार! बेटी, तुम निश्चिन्त रहो।”

फिर वे माताओं की ओर देखकर कहने लगे-‘आप तो सौभाग्यशालिनी हैं कि आपके घरों में ऐसी तपस्विनी कन्याएं-बालाएं हैं। अरे, आप इनको मारती हो? इनको इनकी इच्छा के विरुद्ध, अशुद्ध भोजन खिलाती हो? ये तो पावन पुत्रियां हैं, साक्षात् देवियां हैं। खबरदार! अब इन पर कोई अत्याचार नहीं होना चाहिए। अब आप भले ही इन्हें अपने साथ ले जाइए परन्तु जब भी जाने के लिए इनका मन करे, इन्हें खुशी-खुशी छुट्टी दे देना।’ ऐसा कहकर उन्होंनें हमें छुट्टी दी।

हमारी वे माताएं मन-ही-मन में डर रही थीं कि हमारी असत्यता की कहीं और पोल न खुल जाए। उन्होंने मेहताजी से कहा कि हमारी कन्याएं घर से भाग गई हैं। परन्तु वास्तव में तो ऐसा था ही नहीं।

आगे क्या हुआ अगले अंक में क्रमशः....

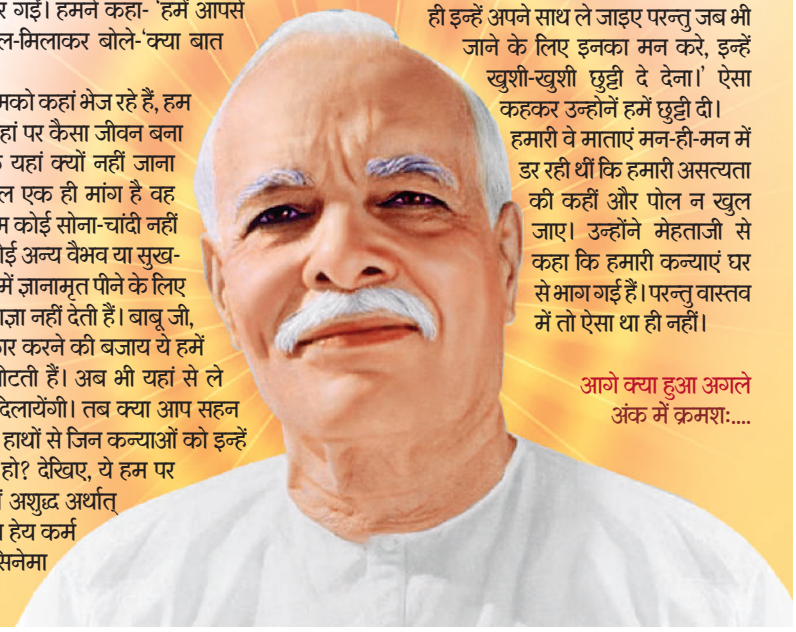

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भाई-बहनों को मिले पुरस्कार या सम्मान से रुबरु कराएंगे। इस बार आप जानेंगे संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को डॉ.ऑफ लिटरेचर उपाधि से सम्मान तथा राजकोट की बीके भारती को गारडी अवार्ड से सम्मानित किया गया....

डॉक्टर ऑफ लिटरेचर उपाधि से दादी हृदयमोहिनी सम्मानित

दादी हृदयमोहिनी के लिए डॉक्टर ऑफ लिटरेचर उपाधि स्वीकारते हुए बीके मृत्युंजय और उपस्थित स्नातक।

शिव आमंत्रण » बल्लारी। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को कर्नाटक के बल्लारी में विजयनगर श्री क्रिशाना देवराय यूनिवर्सिटी के सातवें दीक्षांत समारोह के दौरान समाज में उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि से सम्मानित किया गया।

आपको बता दें, दादी जी वर्तमान में मुंबई में चिकित्सा देखभाल में हैं जिसके चलते ये सम्मान संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय को यूनिवर्सिटी की ओर से दिया गया। इस अवसर पर यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. एमएस सुभाष, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. अनिल डी. सहस्त्रबुद्धे समेत स्नातक छात्र उपस्थित रहे।

राजकोट सबजोन प्रभारी बीके भारती गार्डी अवार्ड से सम्मानित

गार्डी अवार्ड स्वीकारते हुए राजकोट सबजोन प्रभारी बीके भारती।

शिव आमंत्रण » राजकोट। ब्रह्माकुमारीज़ की राजकोट सबजोन प्रभारी बीके भारती द्वारा पिछले 50 सालों में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार राजकोट के हर छोटे बड़े स्थानों में किया है। उनकी सेवाओं एवं त्याग व तपस्या को देखते हुए आरडी गार्डी ट्रस्ट ने उन्हें गार्डी अवार्ड से सम्मानित किया। राजकोट के प्रतिष्ठित महानुभावों की उपस्थिति में भव्य समारोह के बीच विधानसभा के अध्यक्ष राजेन्द्र त्रिवेदी, संत श्री देवप्रसाद स्वामी ने बीके भारती को ये अवार्ड देकर सम्मानित किया। साथ ही संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी की भी उन्होंने सभा के बीच भूरी-भूरी प्रशंसा की। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पिछले 83 वर्षों से देश तथा विदेश में सक्रिय रूप से मानवमात्र को भारतीय आध्यात्म व राजयोग मेडिटेशन का संदेश दे रहा है। श्रेष्ठ समाज की स्थापना के लिए देश के अलग-अलग हिस्सों में ईश्वरीय सेवाओं का कारवां बहुत तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। हाल ही में गुजरात राज्य के सौराष्ट्र में ईश्वरीय सेवाओं की गोल्डन जुबली मनाई गई।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में... पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

मेडिटेशन को व्यायाम की तरह जीवन का हिस्सा बना सकते हैं

पिंकी साहू
बीएससी (स्टूडेंट)
बमीठा (मध्यप्रदेश)

मेडिटेशन करने से हमारा मनोबल बहुत बढ़ा है। साथ में सभी के प्रति आत्मिक दृष्टिकोण पैदा हुआ है। अब जब कभी मन अशांत होता है तो सिर्फ मेडिटेशन करने से ही मन को शांति मिलती है। तब बेहद आनंद का अहसास होता है। रोज-रोज अभ्यास से परमपिता परमात्मा भगवान शिवबाबा के प्रति लगातार प्रेम बढ़ता जा रहा है। इससे आत्मिक शक्ति काफी बढ़ी है। राजयोग के अभ्यास से हमारे अंदर का गुस्सा, चिड़चिड़ापन जैसी कई बुराई समाप्त हो गईं हैं। इस अभ्यास से मेरे अंदर गजब की एकाग्र शक्ति में बढ़ोतरी हुई जिससे मुझे पढ़ाई के साथ और भी कामों में दिल लगने लगा है। मैं युवाओं से अपील करना चाहूंगी कि राजयोग को अपने जीवन में व्यायाम की तरह एक हिस्सा बना लें।

परमात्म ज्ञान से जीवन में एकाग्रता व पवित्रता सहजता से आती है

अमर (राजऋषि)
M.Sc Value & Spirituality
(स्टूडेंट) बेगूसराय (बिहार)

परमात्म ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से गहन अनुभूतियां प्राप्त हुईं जिससे मानसिक व शारीरिक आत्मबल विकसित हुआ। 15 वर्ष पूर्व अपने जीवन को ईश्वरीय कार्यों में समर्पित कर जीवन को चरित्रवान एवं गुणवान बनाया। परन्तु ऐसे ज्ञान की खोज के साथ हरेक धर्म व आध्यात्मिक साहित्य को पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। साहित्य में पवित्रता का विषय को अवश्य पढ़ता था। परंतु राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास द्वारा पवित्रता (ब्रह्मचर्य) की शक्तियों को अनुभव किया। जिससे मेरा आंतरिक शक्तियां एवं विवेक जागृत हुआ। इसलिए हम युवाओं को विशेष प्रेरणा देते हैं कि जीवन में एकाग्रता और पवित्रता परमात्म ज्ञान से ही प्राप्त होती है। क्योंकि आजकल के युवाओं के जीवन में सफलता तभी सुनिश्चित है जब वह पवित्रता को जीवन में आत्मसात कर राजयोग मेडिटेशन की ओर बढ़ें।

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर 15 दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित

बीएसएफ जवानों को बताए तनावमुक्ति के सूत्र

शिव आमंत्रण » भिलाई। भारतीय सीमा सुरक्षा बल के जवानों को तनावों से मुक्ति के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ के भिलाई स्थित अन्तर्दिशा के पीस ऑडिटोरियम में बीएसएफ के जवानों के लिए 15 दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम आयोजित किया गया। समापन समारोह पर गीत गायन कार्यक्रम हुआ। समारोह में डीआईजी एसके त्यागी एवं असिस्टेंट कमांडेंट नवीन मोहन शर्मा ने बीके गीता और बीके प्राची को मोमेंटो देकर सम्मानित किया। सभी जवानों और अधिकारियों ने बीएसएफ की ट्रेनिंग के साथ मिली आध्यात्मिक ट्रेनिंग के लिए बीके बहनों का धन्यवाद व्यक्त किया। बीके प्राची एवं बीके माधुरी द्वारा सभी जवानों को टोली और स्लोगन कार्ड दिया। डीआईजी केएस शेखावत, डीआईजी उमेद सिंग, डीआईजी कमांडेंट आरएस राणा ने भी कार्यक्रम का लाभ लिया। सभी अधिकारियों ने मेडिटेशन कक्ष में जाकर जीवन में बुराई छोड़ने का संकल्प भी लिया।

बीएसएफ अधिकारियों के साथ भिलाई सेवाकेंद्र प्रभारी बीके आशा।

सूखे कंठ की प्यास बुझाने भुवनेश्वर में खोला जलछत्र प्वाइंट

जलछत्र का उद्घाटन करने के बाद सहायक पुलिस आयुक्त तरुण कुमार दास, इंस्पेक्टर बिश्वा रंजन नायक को ईश्वरीय सौगात देतीं बीके बहनें।

शिव आमंत्रण » भुवनेश्वर। भुवनेश्वर अपनी हरियाली के लिए प्रसिद्ध है लेकिन हाल ही में 'फानी' तूफान के कारण सभी को प्रकृति के प्रकोप से झुकना पड़ा है। उच्च तापमान की वजह से भुवनेश्वर नगर निगम ने स्वयं सेवी संगठन से सड़क पर पेयजल केंद्र खोलने का अनुरोध किया है। जिसके अंतर्गत पटिया सेवाकेंद्र द्वारा नंदन कानन रोड पर एक 'जलछत्र' प्वाइंट खोला गया।
इस पेयजल केंद्र का उद्घाटन स्थानीय सेवाकेंद्र प्रभारी बीके गोलप, सहायक पुलिस आयुक्त तरुण कुमार दास, इंस्पेक्टर बिश्वा रंजन नायक, वरिष्ठ नागरिक संघ के अध्यक्ष बिक्रम राउत द्वारा रिबन काटकर किया गया। जहां बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

सोशल सर्विस से मिलीं दुआएं बढ़ाएंगी दिव्य धन

शिव आमंत्रण » बीदर। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 5 से 10 वर्ष के बच्चों के लिए आठवें बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। सागारेड्डी सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सुमंगला, बीदर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सुनंदा, स्काऊट गाईड ट्रेनर डॉ. भरत शेट्टी, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. गोविंदराज बच्चा, रिसोर्स पर्सन कीर्ति लता ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इसमें करीब 100 बच्चों ने हिस्सा लिया। बीके सुमंगला ने कहा बच्चों को पढ़ाई के साथ व्यक्तित्व विकास पर जोर देना जरूरी है। सोशल सर्विस में अपना समय देंगे तो दुआएं मिलेंगी उससे दिव्य धन बढ़ता है। दिव्य धन एक ऐसी पूंजी है जो जीवन के अंत तक हमें साथ देती है। इसलिए इस धन को बढ़ाने का सभी को हमेशा प्रयास करते रहना चाहिए।

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

बीके हरीलाल
कार्यकारी निदेशक
गॉडलीवुड स्टूडियो

गॉडलीवुड स्टूडियो में बनने वाला प्रत्येक प्रोग्राम अमूल्य होता है। ऐसा ही एक कार्यक्रम है अमूल्य रतन। अमूल्य रतन वास्तव में आत्म उन्नति का सबसे प्रबल साधन है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद परमात्मा शिव ने संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी ह्दयमोहिनी के मुख से जो ज्ञान उच्चारित किया। उसका गहन विश्लेषण हैं। यह हर किसी के लिए उपयोगी साबित होगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के वरिष्ठ राजयोगी बीके राजू भाई के साथ का वार्तालाप और मुरली पर मंथन बेहद कारगर है। इसे पीस ऑफ माइंड चैनल तथा ओम शांति चैनल पर देख सकते हैं। अधिकतर सेवाकेन्द्रों पर अब तो सायंकालीन क्लास में भी दिखाने लगे हैं। इसलिए आप भी इसका लाभ ले सकते हैं।

वर्षगांठ बोरिवली में सामाजिक सेवाओं के 15 वर्ष हुए पूरे, कई लोगों को मिली दिशा

15 साल से समाज कल्याण में समर्पित 'प्रभु उपवन'

सभा को संबोधित करते हुए जोनल निदेशिका बीके संतोष व मंचासीन वरिष्ठ बहनें।

शिव आमंत्रण » मुंबई। बोरिवली में ब्रह्माकुमारीज़ के प्रभु उपवन सेवाकेन्द्र के सामाजिक सेवाओं के 15 वर्ष पूरे होने पर महोत्सव का आयोजन किया गया। महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश एवं तेलंगाना जोन की निदेशिका बीके संतोष एवं बोरिवली सबजोन प्रभारी बीके दिव्यप्रभा ने वर्षगांठ की बधाई देते हुए संतुलित राजयोगी जीवन जीने पर सभी को मार्गदर्शन किया। आयोजन में संस्थान से जुड़े हजारों सदस्यों ने अपने मोबाईल द्वारा लाइट जलाकर समां को रोशन किया। कार्यक्रम में ठाकुर ग्राम केन्द्र की छात्राओं द्वारा जापानी नृत्य एवं दहिसर पश्चिम केन्द्र के छात्रों द्वारा समूह नृत्य की प्रस्तुति दी गई। इस दौरान सेवाकेंद्र द्वारा पिछले 15 वर्षों में समाज कल्याण, समाज उत्थान व सामाजिक बदलाव के लिए की गई सेवाओं की एक झलक प्रस्तुत की गई।

सार समाचार

ऊर्जा मंत्री शर्मा से बीके करुणा की मुलाकात

शिव आमंत्रण » भदोही। उत्तरप्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा से संस्थान के सदस्यों ने मुलाकात की। इस मौके पर संस्था के सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक बीके करुणा, भदोही सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके विजयालक्ष्मी, बीके ब्रजेश ने मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट की और संस्था की गतिविधियों से अवगत कराते हुए मुख्यालय आने का निमंत्रण दिया। इस अवसर पर भदोही विधायक रविन्द्र नाथ त्रिपाठी भी मुख्य रूप से मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री अशोक गेहलोत से मुलाकात

शिव आमंत्रण » राजसमंद। राजसमंद सेवाकेन्द्र की बीके पूनम ने राजस्थान के सीएम अशोक गेहलोत से मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट की। एक दिवसीय प्रवास पर आए मुख्यमंत्री गेहलोत को बीके सदस्यों ने संस्थान की गतिविधियों से भी अवगत कराया।

ब्रह्माकुमारीज़ में दी जा रही देवी-देवता बनने की ट्रेनिंग: राजयोगिनी अवधेश

शिव आमंत्रण » सागर (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के जोनल हैडक्वार्टर राजयोग भवन भोपाल द्वारा पूरे जोन में महिला सशक्तीकरण अभियान निकाला जा रहा है। अभियान में 40 बालब्रह्मचारी, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहन चल रहे हैं। इसका मकसद नारी को सशक्त बनाना व जागरूक करना है। अभियान के सागर पहुंचने पर कबूला पुल स्थित त्र्यंबकेश्वर गार्डन में समारोह आयोजित किया गया। इसमें जोनल निदेशिका राजयोगिनी अवधेश ने कहा बालब्रह्मचारिणी, राजयोगिनी, तपस्वी ब्रह्माकुमारियां साक्षात् में देवियां हैं जो पूरे समाज को जगाने का कार्य कर रही हैं। ब्रह्माकुमारीज में सहज राजयोग की शिक्षा देकर देवियां-देवी बनने की ट्रेनिंग दी जा रही है। इस दौरान सेवाकेंद्र प्रभारी बीके छाया, बीके नीलम, बीके लक्ष्मी, बीके संध्या, बीके सीता, बीके खुशबू, बीके मोहिनी ने सभा को संबोधित करते हुए बेटियों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने पर जोर दिया।

मां की सेवा से दुआओं के खजानों से होंगे भरपूर

शिव आमंत्रण » पठानकोट। राजयोग सेवाकेंद्र पर मदर्स डे मनाया गया। इसमें सेवाकेंद्र संचालिका बीके सत्या ने कहा मां बचे की प्रथम गुरु, शिक्षक होती है तो हमें मां-बाप की सेवा कर दुआओं की सच्ची कमाई जमा करनी है। डिस्ट्रिक्ट लायन क्लब इंटरनेशनल के गवर्नर एसके पुंज ने कहा जब हम मां की सेवा दिल से करेंगे तो दुआओं के खजानों से भरपूर हो जाएंगे। श्री सांई ग्रुप की मैनेजिंग डायरेक्टर तृप्ता पुंज ने भी संबोधित किया।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस: देशभर में कार्यक्रम, रैली, सेमिनार, प्रदर्शनी से दिया नशामुक्त होने का संदेश

तंबाकू से मुक्ति के लिए ब्रह्माकुमारीज़ का राष्ट्रव्यापी प्रयास

तम्बाकू से प्रतिवर्ष लाखों लोग जिन्दगी की जंग हार जाते हैं। हजारों लाखों लोग बीमारियों से पीड़ित हैं। ब्रह्माकुमारीज संस्था ने अपने देशभर के सेवाकेंद्रों पर विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर व्यसनमुक्ति के लिए अभियान चलाकर लोगों से तम्बाकू से बचने के लिए प्रेरित किया।

तमिलनाडु तिरुवन्नमलाई के कलेक्टर ऑफिस में 'मेरा शहर व्यसनमुक्त शहर' थीम के तहत कार्यक्रम हुआ। जहां आई.ए.एस-के.एस कांदसामी एवं बीके उमा ने रैली को ध्वज दिखाकर रवाना कर तंबाकू मुक्ति के लिए जागरूक किया।

बैंगलुरु बसवानगुडी सेवाकेन्द्र द्वारा धूम्रपान, तंबाकू और नशीले पदार्थों के सेवन के बुरे प्रभावों के बारे में अवगत कराने के लिए जागरुकता शिविर का शुभारंभ श्री. रघुरामन, वीवी पुरम सबजोन प्रभारी बीके अंबिका ने रिबन काटकर किया। इसके लिए खास नशामुक्ति के लिए दवाईंया भी वितरित की गई। इस दौरान पांच हजार से ज्यादा लोग लाभान्वित हुए।

चेन्नई रतन बाजार सेवाकेन्द्र द्वारा डॉ. एमजीआर चेन्नई सेन्ट्रल सब-अर्बन रेलवे स्टेशन पर कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर चेन्नई सेंट्रल के आईआरटीएसके निदेशक बी.गुग्नेसन, अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा निदेशक पी. आनंदन, स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके गीता ने सभी लोगों को व्यसन के सेवन से बचने की प्रतिज्ञा कराई।

जबलपुर कटंगा कॉलोनी सेवाकेन्द्र व नव ज्योति नशामुक्ति सह पुनर्वास केन्द्र के संयुक्त प्रयास से शहर में जन जागरुकता रैली एवं व्यसनमुक्ति चित्र प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी में सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके विमला, पुनर्वास केन्द्र के हेमंत सोलंकी, ट्रैफिक के एडिशनल एसपी अमृत मीना समेत अन्य कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।

इंदौर कालानी नगर सेवाकेन्द्र द्वारा एरोड्रम रोड स्थित श्रमिक शेड पर व्यसनमुक्ति चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। शुभारम्भ मध्यप्रदेश के पूर्व राज्यमंत्री योगेन्द्र महंत ने किया। इसमें युवाओं ने अवलोकनकर्ताओं को चित्रों के माध्यम से व्यसन से होने वाले दुष्परिणामों से अवगत कराया और आयोजन स्थल पर नुकड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई। इस दौरान कई लोगों ने व्यसन छोड़ने की प्रतिज्ञा कर व्यसन दान पेटी में व्यसनों का दान दिया।

नरसिंहपुर, मप्र ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान, सामाजिक न्याय एवं नि:शक्त जनकल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में शहर के मुख्य मार्गों से नशामुक्ति जन जागरण चेतना रैली निकाली गई। इसके बाद जनपद मैदान में समस्त मजदूर संगठन के लिए विशाल सार्वजनिक नशामुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। राजयोग शिक्षिका बीके प्रीति समेत कई लोग उपस्थित थे।

राजकोट सभी सेवाकेन्द्रों पर तंबाकू निषेध दिवस पर रंगोली बनाकर व्यसनमुक्ति का संदेश दिया गया। पंचशील सेवाकेन्द्र ने हूमन चेन एवं रैली द्वारा लोगों से शहर को व्यसनमुक्त बनाने का आह्वान किया। साथ ही तंबाकू छोड़ने का संकल्प कराया।

हाथरस मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय तम्बाकू निषेध दिवस पर आशा कार्यकर्ताओं एवं बुद्धिजीवियों को संबोधित करते हुए सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके शान्ता, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. ब्रजेश राठौर, एसीएमओ डॉ. विजेन्द्र सिंह, जिला स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी चतुर सिंह ने तम्बाकू में पाये जाने वाले हानिकारक पदार्थों की जानकारी देते हुए कहा कि तम्बाकू सेवन से प्रतिदिन औसतन तीन हजार लोगों की जान चली जाती है।

कादमा, हरियाणा ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान व ग्रामीण विकास मंडल के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय तंबाकू निषेध दिवस पर बधवाना-जावा एमडी सीनियर सेकंडरी स्कूल में छात्रों को तंबाकू के नुकसान के बारे में अवगत कराया गया। ग्रामीण विकास मंडल अध्यक्ष राजेंद्र कुमार ने छात्रों को शपथ दिलाते हुए कहा कि अपने मां-बाप या सगे संबंधियों को व्यसनों से मुक्ति दिलाने के प्रयास करना चाहिए।

फिरोजाबाद, यूपी रामनगर ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र द्वारा एक रैली का आयोजन किया गया जिसमें ओम शांति भवन एटा रोड से रैली निकल कर बड़े चौराहे तक पहुंची। वहां पर सभी को व्यसनों से मुक्त रहने की शिक्षा दी गई। एक कहावत में कहा... ढाई इंच की बीड़ी है मौत की सीढ़ी। का नारे लगाकर किया लोगों को जागृत किया।

देहरादून तंबाकू मुक्ति दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें उत्तराखण्ड के कृषि मंत्री सुबोध उनियाल ने ब्रह्माकुमारीज़ की तारीफ करते हुए कहा कि इससे जागृति आएगी। इस अभियान के संचालन के लिए बीके मंजू ने शुभकामनाए दीं।

टोहाना-हरियाणा सिविल अस्पताल के एसएमओ डॉ. हरविंदर सागु को नशामुक्ति प्रदर्शनी समझाते हुए बीके कौशल्या ने सबको परमात्मा का भी संदेश दिया।

तोशाम, हरियाणा राजकीय उच्च विद्यालय, पीएस नवयुग स्कूल, मॉडल संस्कृति स्कूल और शिव आईटीआई के छात्रों के लिए तोशाम ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र और मेडिकल विंग के संयुक्त तत्वावधान में नशामुक्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया। तोशाम सिविल अस्पताल के वरिष्ठ मेडिकल अफसर डॉ. जितेंद्र, आरएसएस के जिला प्रमुख आत्माराम, कैरू की सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शोभा, तोशाम की बीके सुनीता ने स्पष्ट किया।

ग्वालियर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मेडिकल प्रभाग द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस के उपलक्ष्य में रेलवे स्टेशन पर व्यसन मुक्ति प्रदर्शनी लगाई गई। इसका शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। जहां स्टेशन उप प्रबंधक दिनेश नचरेले एवं ब्रह्माकुमारीज़ से बीके प्रहलाद उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि तंबाकू धीमे जहर की तरह कार्य करता है।

बीड़ी, गुटखा, पान, तंबाकू यह हैं जीवन के चार डाकू

मध्यप्रदेश पन्ना, सागर एवं सारंगपुर में भी तंबाकू निषेध दिवस के तहत जन जागरुकता का माहौल दिखा। अपने जीवन को नशे से बचाने की प्रेरणा देते हुए बीके सदस्य अपने-अपने क्षेत्र में संदेश देते हुए नजर आए। इंदौर के न्यू पलासिया तथा पीथमपुर में प्रदर्शनी एवं सार्वजनिक कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को सचेत किया गया। इस प्रकार राजस्थान के भीलवाड़ा, भीनमाल एवं अरुणाचल प्रदेश में व्यसनमुक्ति पर प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक, शहर में रैलियां निकाली गई, जिसमें सेवाकेन्द्र से जुड़े सदस्यों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। आगे उड़ीसा के राउर केला स्थित इंद्रा नगर, आईटीआई, कुन्द्रा ग्राम तथा और भी अन्य कई स्थानों समेत छत्तीसगढ़ के रायपुर एवं बिहार गया के सिविल लाइंस में भी इस तरह के आयोजन हुए।

मन के पर्यावरण संतुलन से राष्ट्र निर्माण एवं वैश्विक प्रगति में ब्रह्माकुमारीज़ का प्रयास

शिव आमंत्रण । पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिए मनाए जाने वाले विश्व पर्यावरण दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से दुनियाभर में जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। ब्रह्माकुमारीज संस्थान ने देशभर में अपने सैकड़ों सेवाकेन्द्रों पर पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्यक्रम आयोजन करने का संकल्प दिया था। संस्थान द्वारा बड़े पैमाने पर पर्यावरण संरक्षण दिवस के रूप में मनाया गया। इस रिपोर्ट को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस पुनीत कार्य में सहभागी सेवाकेन्द्रों को बधाई का सर्टिफिकेट भेजा है।

आबूरोड ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन में भी पर्यावरण प्रदूषण के कारण और उसके निवारण के लिए जागरुक किया गया। रैली में ग्लोबल वार्मिंग के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं के निवारण के लिए व्यापक रुप में पर्यावरण दिवस मनाकर बचाने की अपील की गई। संस्थान के पदाधिकारियों ने लोगों से पौधे लगाकर इस समस्या से उबरने का आह्वान किया।

परमात्मा की शक्ति से कर सकते हैम वातावरण को भी शांत और शक्तिशाली

बीरगंज नेपाल में बीरगंज के उपसेवाकेन्द्र आदर्श नगर पिलुवा के निर्माणाधीन बाल शान्ति उद्यान परिसर में 5 दिवसीय वातावरण संरक्षण सम्बन्धित विचार गोष्ठी एवं पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि के तौर पर प्रदेश नं. 2 के विधायक ज्वाला साह, उपभोक्ता समिति के अध्यक्ष रविन्द्र गिरी, निजगढ़ नगरपालिका के उपमेयर लीलादेवी खनाल, निजगढ़ नगरपालिका वडाध्यक्ष केशव ढोडारी समेत विभिन्न संस्था के प्रतिनिधि, क्षेत्रीय प्रभारी बीके रविना, बीके जमुना ने दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की। भागदौड़ और तनाव से ग्रस्त वातावरण में मानव कुछ समय भी शान्ति सुकुन और खुशी की अनुभूति नहीं कर पा रहा है। परमात्मा की शक्ति एवं सकारात्मक चिंतन से स्वयं को सशक्त कर पर्यावरण को भी शान्त व शुद्ध बनाया जा सकता है यही कुछ विचार मौजूद वक्ताओं ने रखे।

राष्ट्र के निर्माण में स्वच्छ मन और बुद्धि का योगदान असाधारण

बसवनगुडी ब्रह्माकुमारीज़, बसवनगुड़ी-बैंगलुरू ने पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ वर्तमान पर्यावरणीय परिस्थितियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए सकारात्मक पर्यावरणीय कृतियां करने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया। पौधरोपण और स्वच्छता के माध्यम से आसपास के क्षेत्रों में पानी की बचत, बिजली का कम उपयोग, जैविक और स्थानीय खाद्य पदार्थों का उपयोग करना, वन्यजीवों को बचाना आदि कार्यक्रमों को बढ़ावा देने पर कार्यक्रम में जोर दिया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन ब्रह्माकुमारीज के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय, वीवी पुरम सेवाकेंद्र प्रमुख बीके अंबिका, विधायक रवि सुब्रमण्यम और श्री. तम्मेगौड़ा ने किया। विधायक रवि सुब्रमण्यम ने पर्यावरण प्रदूषण के कारणों को साझा किया। बच्चों ने पर्यावरण के महत्व को समझाते हुए नृत्य और नाटक प्रस्तुत किए। बीके मृत्युंजय ने 'स्वच्छ मन - हरित पृथ्वी' पर चर्चा की। उन्होंने कहा, स्वच्छ समाज और पर्यावरण संपन्न राष्ट्र के निर्माण में स्वच्छ मन और बुद्धि का महत्व असाधारण है। बीके अंबिका ने सकारात्मक पर्यावरणीय कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार साझा किये। आयोजन में शामिल 300 सदस्यों ने बेहतर भविष्य के लिए धरती को बचाने की शपथ ली। पूर्व संध्या पर, पीस मार्च आयोजित किया गया जिसका कर्नाटक के कैबिनेट मंत्री पीजीआर सिंधिया तथा राज्य के भारत स्काउट्स एंड गाइड्स के मुख्य आयुक्त और सिविल इंजीनियर द्वारा झंडा लहराया गया। बच्चों ने वैश्विक जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक पेश किए। पर्यावरणविद और कन्नड़ फिल्म अभिनेता सुरेश हेब्बालकर ने कहा, धरती की सुंदरता बनाए रखने के लिए कुछ सकारात्मक कार्यक्रम अपनाये।

वैश्विक प्रगति के साथ पर्यावरण सन्तुलन जरूरी... मुदित कुमार सिंह, प्रधान मुख्य वन सरंक्षक

रायपुर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर शान्ति सरोवर में आयोजित पर्यावरण महोत्सव का उद्घाटन किया गया। छोटे-छोटे बाल कलाकारों ने सुन्दर नृत्य नाटिका के माध्यम से प्रकृति को बचाने का सन्देश दिया। बाद में मुदित कुमार सिंह ने शान्ति सरोवर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण महोत्सव का शुभारम्भ किया। अवसर पर प्रधान वन संरक्षक मुदित कुमार सिंह ने कहा, कि अगर भविष्य को सुखद बनाना है तो वैश्विक प्रगति के साथ-साथ पर्यावरण सन्तुलन बनाए रखना जरूरी है। जब तक संवेदनशीलता नहीं आएगी और प्रकृति के साथ नहीं जुड़ेंगे तब तक पर्यावरण प्रदूषण को रोकना सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा, कि यह पर्व जून की तपती गर्मी में मनाने का एक कारण यह भी है कि हम गर्मी को देखकर यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि हम किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं? क्षेत्रीय निदेशिका बीके कमला ने कहा, कि विश्व पर्यावरण दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकृति को समर्पित दुनिया भर में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा उत्सव है। उन्होंने बतलाया कि ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा सारे विश्व में पर्यावरण जागृति के लिए किए जा रहे प्रयासों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने हमारी संस्थान को आब्जर्वर स्टेटस प्रदान किया है। इससे पहले बीके रुचिका ने कहा, कि सभी समस्याओं की जड़ मानसिक प्रदूषण है। जब तक हमारे अन्दर काम, क्रोध, लोभ मोह, और अहंकार आदि विकार भरे हैं तब तक हमारा मन शुद्ध और पवित्र नहीं हो सकता। इसलिए बाहरी स्वच्छता से पहले अन्तर्मन की स्वच्छता जरूरी है।

यूके लिपटिस के पेड़ लगाने से बचें, पीपल के पेड़ लगाएं, बालिकाओं ने नृत्य नाटिका से दिया संदेश

राजगढ़ साप्ताहिक विश्व पर्यावरण दिवस मनाने के उद्देश्य से मंगल भवन परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर रैली निकालकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। मंगल भवन परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारी अखिलेश श्रीवास्तव, जनपद पंचायत सी.ई.ओ., बी.पी. तिवारी, माउंट आबू से पधारे हुए बीके छोटेलाल, राजगढ़ सेवाकेंद्र प्रभारी मधु, बीके नम्रता ने दीप प्रज्जवलित कर किया। कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारी अखिलेश श्रीवास्तव ने कहा, कि हमें युकेलिप्टस के पेड़ लगाने से बचना है क्योंकि वे पानी को बहुत ज्यादा अवशोषित करते हैं। वे दलदली क्षेत्रों से निजात पाने के लिए लगाए जाते हैं। उन्होंने कहा, कि हम पौधे लगाएं पर उन्हें संरक्षित जरूर करें। जनपद पंचायत सीईओ बी. पी. तिवारी ने कहा, कि हमें पीपल के वृक्ष लगाने चाहिए क्योंकि वे पेड़ 24 घंटे हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। जिससे स्वास्थ्य को ठीक रखने में मदद मिलेगी। मुख्यालय माउंट आबू से पधारे बीके छोटेलाल ने संस्था के मुख्यालय माउंट आबू की गतिविधियां बताते हुए कहा, कि प्रतिवर्ष वहां 30,000 पौधे लगाए जाते हैं और उन्हें संरक्षित किया जाता है। इस अवसर पर मधु ने आभार व्यक्त किया। कुमारी वर्षा ने पर्यावरण को संरक्षित करने के विषय को लेकर संसार हो हरा-भरा, झूमेगी ये वसुंधरा गीत पर नृत्य प्रस्तुत किया। बीके सीमा ने राजयोग कॉमेंट्री के द्वारा सभी के साथ मिलकर प्रकृति के तत्वों को पवित्रता के प्रकंपन प्रवाहित किए।

सभी प्रदूषणों का मूल है मानसिक प्रदूषण

कोरबा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के तत्वाधान में सरगबुंदिया के अक्षय हास्पिटल के सभागार वायु प्रदूषण पर परिचर्चा एवं चित्रकला प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। अवसर पर अक्षय हास्पिटल के संचालक डॉ. के. सी. देवनाथ ने कहा, कि पेड़ों की कटाई से पर्यावरण का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। विकास के दौर में हम कहीं न कहीं पर्यावरण को क्षति पहुंचा रहें है। उद्योगों के कारण संसाधन और सुविधाये तो बढ़ रहीं हैं, लेकिन वायु प्रदूषण भी बढ़ा है, जो कि एसिड रेन का कारण बनती है। पेडों में उपस्थित क्लोरोफिल तत्व सूर्य की रोशनी के साथ स्वयं का भोजन ग्लूकोज और ऑक्सीजन बनाता हैं।

एम.डी.आर. टी. के एल आई सी मनोज कुमार ने कहा, कि जब मेरे मकान का निर्माण चल रहा था तब मैंने जो नीम के पेड़ लगाये थे, उनकी छांव आज भी सुखदायी ठण्डक प्रदान कर रहीं हैं। वरिष्ठ पत्रकार जी.डी. मिश्रा ने कहा, कि मैनें 500 पौधे लगाने का संकल्प लिया था जिसमें से 311 पौधे लगाकर उनका संरक्षण भी किया है।

हर एक ने एक-एक पौधा लगाने की प्रतिज्ञा की

नीलबड़/ भोपाल विश्व पर्यावरण दिवस पर नीलबड़, भोपाल के सुख शांति भवन में सभी ब्रह्मावत्सों ने अपनी ओर से एक एक पौधारोपण किया। बाहरी वातावरण के साथ-साथ आज लोगों के मन का भी वातावरण अशुद्ध होता जा रहा है इस बात को ध्यान में रखते हुए सभी ब्रह्मावत्सों ने संगठित रूप से प्रकृति के पांचों तत्वों को पवित्रता एवं शांति का दान दिया। इसके प्रति जागरूकता भी फैलाएंगे। अंत में सभी ने भवन के उद्यान में पौधरोपण किया। सुख-शांति भवन सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीता ने इस श्रेष्ठ कदम के लिए सभी को बधाई दी।

नारी सशक्तीकरण अभियान बीना पहुंचने पर तपस्वियों का सम्मान

शिव आमंत्रण ➤ बीना (सागर)/मप्र। बेटियों को शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा बहुत जरूरी है। आध्यात्मिक ज्ञान से हमारा मन सशक्त और मजबूत होता है। इससे हमें हर परिस्थिति का सामना करने की शक्ति मिलती है। वर्तमान में नारी ने अपनी विशेषता और क्षमता को साबित किया है, यदि साथ में आध्यात्म का भी समावेश कर लिया जाए तो शास्त्रों में जो नारी की महिला है वह पुनः साक्षात् में साकार हो जाएगी। उक्त उद्गार भोपाल जोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश दीदी ने व्यक्त किए। भोपाल जोन द्वारा पूरे प्रदेश में नारी सशक्तीकरण अभियान निकाला जा रहा है। इसमें 40 बालब्रह्मचारी, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें शामिल हैं। अभियान बीना पहुंचने पर ज्ञान शिखर सेवाकेंद्र पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज ने कहा इन शिक्षाओं को जीवन में धारण करेंगे तो जीवन सफल हो जाएगा। संचालन बीके जानकी दीदी ने किया।

समर कैंप में बच्चों को दी आदर्श नागरिक बनने की सीख

बीके रजनी व अन्य अतिथियों के साथ समर कैंप में शामिल बच्चे।

शिव आमंत्रण ➤ नागपुर। महाराष्ट्र के जामठा स्थित विदर्भ स्तरीय रिट्रीट सेन्टर विश्व शांति सरोवर में समर कैंप आयोजित हुआ। शुभारम्भ ग्राम पंचायत के सेक्रेटरी शैलेन्द्र, जिला परिषद के डिप्टी सीईओ राजेन्द्र भूयार, नागपुर की क्षेत्रीय निदेशिका बीके रजनी तथा वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके मनिषा द्वारा किया गया। इस दौरान बच्चों ने कई मूल्य आधारित गतिविधियों में भाग लिया, वहीं वर्तमान समय मोबाईल व इंटरनेट की बढ़ती लत से हो रहे नुकसान को बच्चों ने ड्रामा प्रस्तुत कर दर्शाया। शिविर में बच्चों के लिए जीवन का लक्ष्य क्या है? आंतरिक गुणों की अनुभूति, आज्ञाकारिता, आदर, आंतरिक सौंदर्य आदि विषयों पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से राजयोग मेडिटेशन सत्र भी आयोजित हुआ।

विकारों व बुराइयों से आत्मा रूपी हीरे की चमक हुई कमजोर

बीके राधा के साथ अभियान यात्री।

शिव आमंत्रण ➤ लखनऊ। ब्रह्माकुमारीज़ की 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत अखिल भारतीय बस प्रदर्शनी' यात्रा जानकीपुरम से प्रारम्भ हुई जिसकी अगुवाई गले में सन्देश पट्टिका पहने मोटर सायकल सवार भाइयों ने की। मार्ग में पुष्प वर्षा के साथ यह बस यात्रा विकास नगर, निराला नगर, हजरतगंज होते हुए गोमतीनगर पहुंची। अहमदाबाद की बीके गीता के संरक्षण में मुंबई के प्रोफेसर बीके गिरीश सहित बस के साथ तेरह सेवाधारी भाई बहन आये थे जो भारतीय सेना, आईटी सेक्टर, शिक्षा आदि क्षेत्रों से जुड़े हैं। वक्ताओं ने बताया कि पांच भौतिक तत्वों से निर्मित मानव देह में जो चैतन्य शक्ति, जिसे ऊर्जा कहें व आत्मा कहें वह ही 'हीरा' है। विकारों, व्यसनों, नकारात्मकता आदि के कारण ही इस हीरे की चमक कम हो जाती है और हमारा जीवन बोझिल, तनाव ग्रस्त, दुखःद हो जाता है। योग के अभ्यास तथा आत्मा के परमात्मा के साथ संयोग से इस हीरे की चमक लौटने लगती है। चमकदार हीरे का स्वामी सदा प्रसन्न, संतुष्ट रहता है। सुदृढ़ आत्मिक स्थिति से विषमतम परिस्थितियों को भी पार कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सम्मेलन

माऊंट आबू में कला एवं संस्कृति प्रभाग का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

परम कलाकार परमात्मा भरता है आत्मा में संगीत

माउंट आबू के ज्ञान सरोवर एकेडरी में कला संस्कृति प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते अतिथिगण।

शिव आमंत्रण ➤ माउंट आबू। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू में कला एवं संस्कृति प्रभाग की ओर से राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें देशभर से कला, संगीत से जुड़ कलाकारों व जानी-मानी हस्तियों ने भाग लिया।

सम्मेलन में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री प्रतिमा कानन ने कहा कि परमात्मा परम कलाकार है जो आत्मा में संगीत भरता है। कलाओं में निखार लाने के लिए ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा प्रशिक्षित राजयोग मनोबल को बढ़ाता है। जिससे मन की क्षमताओं का विकास होता है। अभिनेत्री अरूणा सांगल ने कहा कि चरित्र को श्रेष्ठ बनाने की कला राजयोग के माध्यम से सहज ही सीखी जा सकती है। राजयोग से मन के अंदर छिपी कलाओं में निखार आता है। जो कर्म क्षेत्र में कार्य को बेहतर से बेहतर करने में मद्द करती हैं। आगरा से नृत्य ज्योति कत्थक केंद्र निदेशक ज्योति खण्डेलवाल ने कहा कि नृत्य का गुरु शिव को ही माना जाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की शिक्षा स्वयं शिव निराकार परमात्मा की ओर से प्रदान की जाती है। जो मानव में दिव्यता भर देती है। शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युजंय ने कहा कलाकार आने वाले समय को आकार देने योग्य होते हैं। कत्थक नर्तक हेमंत पाण्डे ने कहा कि मन, वचन, कर्म की पवित्रता आत्मा का श्रृंगार है। मीडिया प्रभाग अध्यक्ष बीके करूणा सहित अन्य अतिथियों ने भी विचार रखे।

सार समाचार

खुद की पहचान, परमात्म परिचय और विचारों पर ध्यान करेगी हर समस्या हल

शिव आमंत्रण ➤ फगवाड़ा/पंजाब। 'सांसारिक समस्याए आध्यात्मिक समाधान' विषय के तहत पंजाब के फगवाड़ा स्थित गुप्ता पैलेस में भव्य पब्लिक प्रोग्राम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मुख्यालय माउंट आबू से वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके सूरज ने अपने वक्तव्य में आध्यात्मिकता को हर छोटी बड़ी समस्या का समाधान बताते हुए जीवन में सदैव सकारात्मक विचारधारा को अपनाने पर जोर दिया। उन्होनें कहा, पहले खुद की पहचान करा लो, उसके बाद परमात्मा का परिचय लो और अपने विचारों पर ध्यान दो।

खुशहाल समाज बनाने के लिए समाज सेवा अभियान प्रतिबद्ध

शिव आमंत्रण ➤ पठानकोट/पंजाब। समाज सेवा अभियान का सिस्टर सत्यकिशन प्रभारी, पठानकोट की उपस्थिति में शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा बाल्मीकि चौक पर एक उत्साहजनक स्वागत किया गया। बीके अमीर चंद ने समाज सेवा विंग की गतिविधियों के बारे में बताते हुये कहा, कि इस विंग का उद्देश्य लोगों में सेवा की भावना जागृत करना और उन्हें आध्यात्मिक-सामाजिक सेवा में संलग्न होने के लिए प्रेरित करना है।

वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात करना हो सकता है जानलेवा : सिद्धार्थ खत्री

शिव आमंत्रण ➤ राजकोट/गुजरात। 5वें संयुक्त राष्ट्र वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह 2019 के तहत लीडरशिप ऑन रोड सेफ्टी विषय पर राजकोट के पंचशील सेवाकेन्द्र पर रोड सेफ्टी वीक का आयोजन किया गया। इस मौके पर जॉइंट पुलिस कमीश्नर सिद्धार्थ खत्री, राजकोट सबजोन प्रभारी बीके भारती, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके अंजू ने दीप प्रज्वलन कर त्रिदिवसीय कार्यक्रम का आगाज किया। खत्रीजी ने कहा वाहन चलाते समय मोबाईल फोन का इस्तेमाल न करें क्योंकि मोबाईल पर बात कभी जानलेवा भी हो सकती है।

परिस्थितियों से विचलित न हों, उन्हें चुनौती समझें और आगे बढ़ें : बीके शक्तिराज

शिव आमंत्रण ➤ रायपुर/छग। रायपुर के शांति शक्ति सरोवर में शिविर का आयोजन किया गया। इसमें मेमोरी मैनेजमेन्ट ट्रेनर बीके शक्तिराज सिंह ने कहा विपरीत परिस्थितियों से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। परिस्थितियों को चुनौती समझकर आगे बढ़ें। जो चुनौतियों का सामना करते हैं वही जीवन में सफल होकर समाज के आगे लीडर बनते हैं। हम लोग वही करते हैं जो हम चाहते हैं परन्तु होता वह है जो परमात्मा की इच्छा है।

परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम युग की लांचिंग सेरेमनी में लोकपाल न्यायाधीश के विचार...

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की मूल्यों के प्रति दृढ़ता से निश्चित ही बनेगा एक अच्छा समाजः लोकपाल

शिव आमंत्रण ➤ आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वार्षिक थीम परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम युग की लांचिंग सेरेमनी मुख्यालय शांतिवन परिसर के विशाल डायमण्ड हॉल में की गई। इस अवसर पर देश के पहले लोकपाल न्यायाधीश पिनाकी चन्द्र घोष बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। बहुप्रतीक्षित देश के प्रथम लोकपाल न्यायधीश पिनाकी चन्द्र घोष ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के शांतिवन पहुंचे। संस्थान की वार्षिक थीम का विशाल डायमंड हॉल में लांचिंग का कार्यक्रम रखा गया। डायमंड हॉल में पहुंचे हजारों लोगों की संख्या को सम्बोधित करते हुए प्रथम लोकपाल ने पिनाकी चन्द्र घोष ने कहा, कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान समाज में मूल्यों के प्रति दृढता से कार्य कर रहा है। ऐसे में निश्चित ही एक अच्छा समाज बनेगा। उन्होंने कहा संस्था 140 देशों में 8000 सेवाकेंद्रों द्वारा कार्य कर रही है यह देखके मुझे हर्ष हो रहा है। संस्था को आंतरराष्ट्रीय स्तर पर पीस मैसेंजर का अवार्ड भी मिला है। इसके साथ ही संस्था के महासचिव बीके निर्वैर तथा संस्था के कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय तथा बीके मुन्नी ने भी वर्ष की थीम पर पूरे वर्ष समाज में कार्य करने की अपील की। जिससे एक मूल्यपरक समाज बन सके। समारोह में उपस्थित अतिथियों ने लोगों से संकल्प कराया कि वे मूल्यों को जीवन में हमेशा स्थान देकर पालन करेंगे।

सभा को संबोधित करते लोकपाल न्यायाधीश पिनाकी चन्द्र घोष।

ब्रह्माकुमार दिलीप शेखावत ने माउंट एवरेस्ट पर लहराया शिव ध्वज, बोले- मनोबल की शक्ति से सब संभव

पिलानी सेवाकेंद्र पर सम्मान के बाद अपने परिवार एवम् बीके सदस्यों के साथ दिलीप शेखावत।

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ते हुए परमात्मा की याद बहुत मदद की

शिव आमंत्रण ➤ माउंट एवरेस्ट। राजस्थान के रहने वाले दिलीप सिंह शेखावत ने दुनिया के सबसे ऊंचे पर्वत शिखर माउण्ट एवरेस्ट पर पहुंचकर परमात्मा शिव का ध्वज लहराया। आपको जानकर खुशी होगी कि दिलीप ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से जुड़े हैं और शिखर पूरा कर वापिस अपने शहर राजस्थान पहुंचने पर पिलानी स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के सेवाकेन्द्र पर उनके सम्मान में कार्यक्रम रखा गया, जहां उन्होंने परमात्मा शिव द्वारा इस यात्रा के दौरान मिली मदद का जिक्र किया। उन्होने कहा, मै जैसे ही शिखर पर जा रहा था, मुझे बाबा की याद से शक्ति मिल रही थी। मुझे ऊपर चढ़ने के बाद मेहनत का एहसास भी नहीं हुआ। इस मौके पर सेवाकेन्द्र से जुड़े सदस्यों समेत दिलीप का पूरा परिवार भी सेवाकेन्द्र पर मौजूद था। जहां सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके आशा ने उन्हें शॉल ओढ़ाकर एवं ईश्वरीय सौगात भेंटकर सम्मानित किया और उनकी सफलता पर अपनी शुभआशाएं व्यक्त की।

माउंट एवरेस्ट पर चढ़ते हुए दिलीप शेखावत।

सीख

माऊंट आबू में 40वां राष्ट्रीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजित

नौनिहालों ने भरी उड़ान, स्पर्धाओं में दिखाई प्रतिभा

म्यूजिकल चेयर, बोरी दौड़ तथा लेमन स्पून प्रतियोगिता में शामिल बच्चे।

शिव आमंत्रण ➤ आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज संस्था के राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित 40वें बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के तीसरे दिन तपोवन में खेलकूद प्रतियोगितायें आयोजित की गयी जिसमें बालक एवं बालिकाओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।
बालक एवं बालिकाओं के लिए सौ मीटर की लम्बी दौड़, उंची कूंद, नीबू दौड़, बोरी दौड़, म्यूजिकल चेयर की प्रतियोगितायें आयोजित की गयी। सौ मीटर की दौड़ में डायमंड ग्रुप में हरियाणा के हिमेश हिंगराणी प्रथम, गुजरात लोटस हाउस अहमदाबाद के हर्षराज वाघेला द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर गुजरात के सचिन कुलकर्णी विजेता रहे। प्रथम विजेता दिल्ली की दिव्या उबास प्रथम, महाराष्ट्र की तन्या द्वितीय तथा दिल्ली की ही दिशा काजला ने तीसरे स्थान पर बाजी मारी। लम्बी कूद में नागरधाम महाराष्ट्र के आदित्य देवीदास ने प्रथम, दिल्ली के अभिषेक सिंह द्वितीय तथा राजस्थान के आर्यन शेखावत विजेता रहे। लेमन स्पून प्रतियोगिता में जलगॉव की पूजा तेली प्रथम, बीके कालोनी तलहटी की सोना चौहान ने द्वितीय तथा बीके कालोनी तलहटी की स्नेही ने ही तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में बीके जीतू, बीके भानू, बीके मोहन, बीके रामसुख मिश्रा, बीके सचिन, अनूप सिंह, बीके नितिन, बीके कृष्णा, बीके अमरदीप, बीके रवि समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

अलविदा डायबिटीज

पिछले अंक से क्रमशः

अनेक बीमारियों की जड़ है शुगर

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
मधुमेह रोग विशेषज्ञ
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

जीवन में किसी न किसी कारण से थोड़े समय के लिए बीमार हो जाना एक साधारण बात है। आज के कलुषित और प्रदुषित वातावरण में कभी न कभी हरेक व्यक्ति कोई न कोई बीमारी का शिकार हो ही जाता है। कुछ दशक पहले कलेरा, प्लेग, स्मॉल पॉक्स आदि बीमारी गांव-गांव में फैलकर महामारी का रूप लेकर हजारों के लिए जानलेवा बन जाती थी। इन बीमारियों को हमने प्रायः निवारण कर दिया है। परन्तु आज समग्र विश्व में और खास कर भारत वर्ष में कुछ नई बीमारियां जैसे कि उच्च रक्तचाप, डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर और मानसिक रोग आदि महामारी के रूप में फैल रही है। इन बीमारियों में से एक मुख्य बीमारी डायबिटीज है जिसके बारे में हम चर्चा करेंगे। क्योंकि यह अनेकानेक बीमारियों को जन्म देनेवाली जननी और खामोश है इसलिए गंभीर भी है।

हर 11 व्यक्तियों में से 1 व्यक्ति में पाई जाने वाली बीमारी है डायबिटीज...

डायबिटीज वास्तव में कोई नई बीमारी नहीं है, यह तो बहुत प्राचीन बीमारी है। भारत के आयुर्वेद में इसे **'मधुमेह'** के नाम से वर्णन किया गया है। परन्तु प्राचीन काल में यह कोई हजारों में वा लाखों में किसी एक को ही ग्रसित किया हुआ पाया जाता था। आज हम फिर से इस बीमारी के बारे में चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि विगत कुछेक वर्षो के अंदर ही यह घर-घर में व्यापक हो गई है। सारे विश्व में आज यह बीमारी 11 व्यक्तियों में से 1 में पाई जाती है। हमारे भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों में तो एक संकट कालीन परिस्थिति आ पहुंची है। शहरों में लगभग एक भी ऐसा परिवार नहीं होगा जिसमें डायबिटीज का मरीज नहीं हो। महानगरों में 3-4 वयस्क व्यक्ति में से एक में अर्थात लगभग 25-30 प्रतिशत लोगों में यह बीमारी दिखाई देने लगी है और ग्रामीण क्षेत्रों में इस बीमारी से 5-10 प्रतिशत लोग ग्रसित हैं।

विश्व में हरेक 20 सेकंड में एक मरीज का पांव काटना पड़ रहा है...

कुछ साल पहले तक यह बीमारी सिर्फ अमीर लोगों में पाई जाती थी। इसलिए इसे एक राजरोग माना जाता था। परन्तु आज धनी-निर्धन, अमीर-गरीब, शहरी हो या ग्रामीण सबमें पाई जाती है। 30 से 40 साल पहले 60 साल के उम्र के बाद ही लोग इस बीमारी से ग्रसित होते थे। आजकल तो बच्चों से लेकर बुढ़े तक सबको यह निगलती जा रही है। सबसे बड़ा एक दुःखद विषय यह है कि केवल भारत में ही हर साल लगभग10 लाख लोग इस बीमारी के कारण ही मृत्यु-वरण कर रहे हैं और सारे विश्व में लगभग आधे करोड़ (5 millions) मरीज हर साल जान गवां रहे हैं। प्रायः हर 6 सेकण्ड में कोई न कोई डायबिटीज मरीज मृत्यु-वरण कर रहा है। परन्तु सबसे मर्म स्पर्शी बात तो यही है कि हर 20 सेकण्ड में कोई न कोई एक डायबिटीज मरीज का एम्प्यूटेशन हो रहा है **(पांव काटना पड़ रहा है)**। अगर गंभीरता से अनुचिंता किया जाए तो यकिन होगा कि सचमुच यह बीमारी कैसे एक भयंकर रूप ले चुकी है और समग्र विश्व तथा भारत के लिए एक विराट समस्या बन चुकी है।

डायबिटीज हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था को झकझोर देने वाली बीमारी..

आज डायबिटीज एक महा महामारी बन हम सभी का व्यक्तिगत, पारिवारिक और समाजिक जीवन को ध्वस्थ-विध्वस्थ कर रही है और यह हमारे आर्थिक अवस्था को भी झकझोर कर रख दी है जो कि देश की प्रगति के लिए भी एक बहुत बड़ा बाधक है। डायबिटीज की दवाई कितनी महंगी है। अधिकतर मरीज तो निम्न मध्यवित्त परिवार के ही होते हैं। विगत कई सालों से IDF **(इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन)** का कहना है कि आप अपने बच्चों को बचाओ। नहीं तो आपके बच्चों का मौत आपके सामने होगा। सचमुच यह हम सब के लिए एक गंभीर विषय है। और इसे गहराई से सोचकर हम सभी को समाज के लिए कुछ करना होगा नहीं तो आने वाला समय सबके लिए बहुत ही भयानक साबित होगा।

-क्रमश...

यहां करें संपर्क

बीके जगजीत मो. 9413464808 पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान

—नयनहीन लोगों ने अपने अनुभव से दिया संदेश.....

हौसलों की उड़ान से जीत सकते हैं दुनिया की हर जंग: धर्मराजनम

शिव आमंत्रण ➤ आबूरोड। भले ही आंख की रोशनी नही हो परन्तु मन की रोशनी और हौसलों की उड़ान से हर कोई असम्भव को भी सम्भव कर सकता है। यह कहना है पूर्व आईएएस तथा नीति आयोग के पूर्व संयुक्त सचिव आर धर्मराजनम का। आंखों की रोशनी भले ही परेशान कर सकती है लेकिन पराजित नहीं। वे ब्रह्माकुमारीज संस्था के ग्लोबल आडिटोरियम में आयोजित दृष्टिबाधितों के सेमिनार में देशभर से आये लोगों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जब मैं एमकॉम कर रहा था तब मेरे आंखों में समस्या आनी प्रारम्भ हो गयी मैने हर जगह दिखाया परन्तु ठीक नहीं हो पायी और मैं पूरी तरह से ब्लाइंड हो गया। आईएएस में चयन हो गया था उसके बाद नौकरी में तकलीफें आने लगी फिर मैं रिकार्डिंग संस्थान से इसके बारे में सीखा और

दृष्टिबाधितों के कार्यक्रम में उपस्थित लोग के सामने धर्मराजनम एवं मंचासीन अतिथि।

फिर नीति आयोग के संयुक्त सचिव के पद से सेवानिवृत्त हुआ। मेरे सात परमोशन हुआ। परमात्मा ने हमें दिव्य बुद्धि दी है इसके जरिए यह सब सम्भव हो सका है।

पर्यावरण की रक्षा के साथ एक पौधे को पेड़ बनाने का लिया संकल्प

शिव आमंत्रण ➤ आबूरोड। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर ब्रह्माकुमारीज संस्थान तथा सोशल एक्टिविटी ग्रुप की ओर से शांतिवन के सम्मेलन सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित महाराष्ट्र बीजेपी उपाध्यक्ष राकेश कुमार पांडेय ने कहा कि हम संकल्प ले कि एक पौधा लगाकर फिर इसे पेड़ की शक्ल देंगे। इससे ही हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। इस अवसर पर सोशल एक्टिविटी ग्रुप के अध्यक्ष बीके भरत तथा शिव आमंत्रण के सम्पादक बीके कोमल ने स्वच्छता, उर्जा संरक्षण तथा पानी बचाने के लिए पर्यावरण को मुख्य कारक बताया। उन्होंने कहा कि यदि पेड़ पौधे होंगे तो ये सब चीजें अपने आप हो जायेंगी। यदि पर्यावरण नहीं होगा तो हमारा जीवन नहीं होगा।

रैली निकालकर लगाया पौधा

कार्यक्रम के बाद शांतिवन से रैली निकाली गयी। इसके पश्चात वृक्षारोपण भी किया गया। इसमें दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार अरविन्द चतुर्वेदी, बीके भरत, महाराष्ट्र के बीजेपी उपाध्यक्ष राकेश कुमार पांडेय, रिको के क्षेत्रिय प्रबन्धक आर सी वैष्णव, पिंटू सिंह, बीके मोहन, बीके अमरदीप, अनूप सिंह, बीके चन्दा, बीके कृष्णा समेत कई लोगों ने पौधे लगाये तथा पेड़ बनाने का संकल्प लिया।

शोक संदेश

उपराष्ट्रपति, गुजरात के राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री ने जताया दु:ख.....

ब्रह्माकुमारीज़ गुजरात जोन की निदेशिका सरला दीदी का देवलोकगमन, पीएम ने दी श्रद्धांजली

शिव आमंत्रण ➤ आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान गुजरात जोन की निदेशिका राजयोगिनी सरला दीदी का पार्थिक शरीर शुक्रवार को पंचतत्व में विलीन हो गया। उनका लम्बे बीमारी के बाद गुरूवार को अहमदाबाद में 12 बजकर 10 मिनटर पर अंतिम सांस ली थी। उनका पार्थिव शरीर ब्रहकुमारीज संस्थान आबू रोड होते हुए माउण्ट आबू लाया गया। सरला दीदी के देहावसान पर देश के उपराष्ट्रपति वेकैय्या नायडू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ट्वीट कर दुख जताते हुए लिखा कि सरला दीदी समाज में मानवता और करूणा से सत्य का मार्ग प्रशस्त किया है। मैं भाग्यशाली रहा हूँ कि उनका आशिर्वाद हमेशा मिलता रहा है।

पार्थिव शरीर को शांतिवन के तपस्या धाम में रखा गया जहाँ ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संस्था के महासचिव बीके निर्वेर, मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष बीके करूणा, शांतिवन प्रबन्धक बीके भूपाल, कार्यक्रम प्रबन्धिका बीके मुन्नी, यूरोपियन सेवाकेन्द्रों की प्रभारी बीके जयन्ति, दक्षिण अफ्रीका से आयी बीके वेदान्ती, निरमा कम्पनी के चेयरमैन करसन भाई पटेल, आबू रोड नगरपालिका चेयरमैन सुरेश सिंदल, राजकोट प्रभारी बीके भारती, गॉडलीवुड स्टूडियो के कार्यकारी निदेशक बीके हरीलाल, बीके भरत समेत कई संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। यात्रा में गुजरात से मेहसाना क्षेत्र की प्रभारी बीके सरला, अम्बावाड़ी की प्रभारी बीके शारदा, बीके अमर, महादेवनगर प्रभारी बीके चन्द्रिका समेत पूरे गुजरात के वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित थे।

पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि देते दादी रतनमोहनी और अन्य।

इन्होंने ट्वीट कर जताया दुख: सरला दीदी के देहावसान पर देश के गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी, उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल, राज्यपाल ओपी कोहली, केन्द्रिय मंत्री हर्षवर्धन ने दुख व्यक्त किया।

पुष्पांजलि कर दी श्रद्धांजलि: गुजरात के उद्योगपति गौतम अडानी ने गुरूवार को अहमदाबाद में सरला दीदी के पार्थिव शरीर पर पुष्पा अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। वहीं निरमा कम्पनी के प्रबन्धक निदेशक करसन भाई पटेल, शिवानन्द आश्रम के अध्यक्ष आध्यात्मानन्द समेत अध्यात्म तथा प्रशासनिक अधिकारियों ने श्रद्धांजलि दी।

सार समाचार

समर कैंप में दिया वृक्ष बचाओ, स्वास्थ्य और देशप्रेम का संदेश

शिव आमंत्रण ➤ महादेवनगर। अहमदाबाद के बाल व्यक्तित्व विकास समर कैंप में बच्चों को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दृष्टि से स्वस्थ रहने के लिए विविध गतिविधियाँ कराई गई। इस समर कैंप के समापन सत्र में एक विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमे बच्चो ने देश भक्ति गीतों पर अपनी प्रस्तुतियां दी। जिसमें वृक्ष बचावो, स्वास्थ्य, राजयोग मेडिटेशन का महत्व एवं देशप्रेम का संदेश देते हुए सभी प्रेक्षकों का दिल जित लिया।

तन की तंदुरूस्ती के लिए करो शारीरिक योग, तो मन की तंदुरुस्ती के लिए राजयोग

शिव आमंत्रण ➤ राजकोट। रविरत्नापार्क सेवाकेंद्र द्वारा मतोड़ा गांव में तन मन की तंदुरुस्ती पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गाव के उप प्रमुख डॉ. दिव्येश गजेरा ने तन की तंदुरुस्ती के लिए शारीरिक योग, तो मन की तंदुरुस्ती के लिए राजयोग करने की लोगों को प्रेरणा दी। अपने शरीर पर विचारों का प्रभाव कैसे पड़ता है इसके बारे में उन्होनें अच्छी तरह से विश्लेषण किया। राजयोग शिक्षिका बीके डिंपल द्वारा परमपिता परमात्मा की सत्य पहचान भी कराइ गई। कार्यक्रम में करीबन 250 गांव वासी शामिल हो गए थे।

गॉड ऑफ गॉड्स जैसी फिल्मों से बंद होंगे झगड़े

शिव आमंत्रण ➤ मुंबई। मलाड स्थित पी.वी.आर. सिनेमाघर में ब्रह्माकुमारीज़ की नई फिल्म गॉड ऑफ गॉड्स की स्क्रिनिंग की गई। इस मौके पर टीवी और फिल्म अभिनेता जैसे कई प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति में लॉचिंग हुई। इस फिल्म को देखने के बाद आए हुए सभी महानुभावों ने कहा, कि हम सब एक है और एक परमात्मा के बच्चे है। आज धर्म के नाम पर राजनीती की जा रही है। समाज को इकट्ठा लाने मे, भाईचारा निर्माण करने मे यह फिल्म मदद करेगा। लड़ाई, झगड़े बंद हो जायेंगे।

बच्चों ने नाटक कर पेड़ और पानी बचाने का संदेश दिया

शिव आमंत्रण ➤ उल्हासनगर। महाराष्ट्र में उल्हासनगर सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 15 दिवसीय समर कैंप में कक्षा 10वीं तक के बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बच्चों के लिए गीत, संगीत, नृत्य, योगासन के साथ स्मरण शक्ति, आत्म विश्वास को बढ़ाने के लिए समर कैम्प का आयोजन हुआ। स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके सोम, बीके पुष्पा मौजूद रही। लगभग 350 बच्चों ने कैंप में भाग लेकर कई अच्छी बातें सीखी। समापन में पानी व पेड़ बचाओ का संदेश देने के लिए बहुत ही सुन्दर ड्रामा की प्रस्तुति दी।

दृढ़ता शक्ति के बिना सार्थक लक्ष्य प्राप्ति असाध्य

शिव आमंत्रण ➤ अंबिकापुर। बचपन में ही हमको लक्ष्य को पकड़ना है कि मुझे क्या बनना है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष जरूरी है। दृढ़ता शक्ति के बिना सार्थक लक्ष्य प्राप्ति असाध्य है। उक्त विचार संत गहिरागुरू विश्व विद्यालय के कुलपति रोहणी प्रसाद ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा समर कैम्प उत्कर्ष 2019 के शुभारंभ अवसर पर व्यक्त किये। आपने अपने जीवन के अनुभव बताकर बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए कहा, कि जीवन में कोई भी काम छोटा बड़ा नहीं होता। अधीक्षक अभियंता, जी. एल. चंद्रा ने कहा, कि हम अभी से ही छोटे छोटे लक्ष्य निर्धारित कर बड़े लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। सरगुजा संभाग संचालिका बके विद्या ने बच्चों को आशीर्वचन देते हुए कहा, कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आंतरिक व्यक्तित्व है और उसके द्वारा सर्वांगीण विकास करना है।

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि।

सुरक्षा नियमों का पालन करना ही जीवन यात्रा को सुरक्षित करना है: बीके सुरेश

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि तथा यातायात नियमों का पालन करने की शपथ लेती बीके

शिव आमंत्रण ➤ बैंगलुरु। ब्रह्माकुमारीज़ माऊण्ट आबू से पधारे सेफ्टी ट्रेनर बीके सुरेश शर्मा ने कहा यातायात सुरक्षा नियमों का पालन मात्र एक या दो दिन का प्रयास नहीं बल्कि यह हमारे जीवन यात्रा की सुरक्षा का आवश्यक पहलू है। सुरक्षा नियमों की पालना को नियमित दिनचर्या में समाहित करते हुए हर रोज़ और हर जगह प्रयोग में लाने के लिए सभी संकल्प लें तभी सही मायनों में सुरक्षा होगी। वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह के चलते राजयोग एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाऊण्डेशन के यातायात एवम परिवहन प्रभाग द्वारा आयोजित बेंगलुरु के गोट्टेगेरी स्थित राजयोग भवन के नवनिर्मित विशाल सभागार में सड़क सुरक्षा जागृति अभियान का शुभारम्भ करते वह सभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान मौके पर मौजूद कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश तथा तमिलनाडु से आई 250 बीके टीचर्स को प्रभाग द्वारा सड़क सुरक्षा को लेकर की जा रही सेवाओं के बारे में अवगत कराया गया और अपने-अपने शहरों में कार्यक्रम करने की प्रेरणाएं दी गई। कार्यक्रम के अन्त में सभी प्रतिभागियों को सड़क सुरक्षा के लिए यातायात के नियमों का पालन करने का संकल्प कराया गया।

अच्छे-बुरे की पहचान रखो, कारण- जैसा संग, वैसा रंग

जादुगर हेरी का प्रोग्राम उमंग उत्साह के साथ देखते बच्चे।

शिव आमंत्रण ➤ भिलाईनगर। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के पीस ऑडिटोरियम, सेक्टर-7 में कक्षा छठवीं से आठवीं के विद्यार्थियों के लिये आयोजित उत्कर्ष समर कैम्प -19 के दसवें दिन कार्यक्रम को भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका बीके आशा और इंदौर सेवाकेन्द्रों की निदेशिका बीके हेमालता ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा, कि हमें अच्छे - बुरे की पहचान का पता होना चाहिए और हमेशा श्रेष्ठ संग के साथ ही रहना है क्योंकि जैसा संग वैसा रंग। हम जिसके संग रहते है, जैसे दोस्त तो हमारा व्यक्तित्व और आदतें भी उसी के जैसी होती जाती है। संग का बड़ा गहरा प्रभाव पडता है हम पर। इसलिए कहते जैसा संग वैसा रंग। जादुगर हेरी का प्रोग्राम भी एक दिन आयोजित किया गया जिसमें हजारों की संख्या में बच्चों ने सहभागिता की।

स्व प्रबंधन

सृष्टि-चक्र के साथ धर्मों की स्थापना का कार्य

बीके ऊषा, स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

पिछले अंक से क्रमश...

प्रश्न उठता है कि किसको याद करें? निराकार परमात्मा की स्मृति होने के कारण परमात्मा शिव की लिंग रुप में पूजा आरंभ होती है। परन्तु साथ-साथ सतयुग-त्रेतायुग में जो देवी देवता होकर गये थे तो उनकी स्मृति ताजा होने के कारण उनके मन्दिर बनाकर उनकी भी पूजा आरंभ होती है। जैसे आज की दुनिया में कई संतों के भी मंदिर बनते है और लोग उनकी पूजा अर्चना करते हैं। लोगों से जब पूछते हैं कि वह संत तो हमारे जैसे मनुष्य ही थे फिर उनके मंदिर क्यों बनाते? तब लोग यही कहते कि 'वह हमसे श्रेष्ठ हैं इसलिए उनकी पूजा करते हैं।' सोलह कला संपन्न देवी-देवताओं को मनुष्य से श्रेष्ठ समझने के कारण उनके मंदिर बनाकर उनकी पूजा करने लगते हैं। द्वापरयुग के बाद आत्माओं की कलाएँ और कम होती गई और वे धीरे-धीरे देह-अभिमान के वश हो गई। इसी युग में ऋषि-मुनियों ने शस्त्र बनाये,मंदिरो के निर्माण किया, पूजा-पाठ,रीति रिवाज की विधिाँ बनाई, इस तरह भारत में भक्ति मार्ग आरंभ हुआ। भक्त परमात्मा को पुकारने लगे लेकिन यह समय परमात्मा का अवतरण का नहीं है क्योंकि उसका वादा है - 'यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत..... 'जब-जब धर्म की अति ग्लानि होती है,तब-तब मैं आउंगा। द्वापरयुग से तो अधर्म शुरु हुआ है। दु:ख-अशान्ति का समय तो अभी आरंभ हुआ और ऐसे शुरुआत में ही अगर भगवान आ जाएं और गीता का ज्ञान देने लगें तो अधर्म का नाश करके अवश्य ही एक सत्धर्म की स्थापना की होती, लेकिन द्वापर के बाद तो कलियुग आया अर्थात् घोर अघर्म का युग आया। सवाल उठ सकता है कि क्या गीता के ज्ञान से अधर्म के युग की स्थापना हुई? फिर तो भगवान् के आने का उद्देश्य ही सिद्ध नहीं होता। इसका अर्थ यह है कि अवश्य ही परमात्मा गीता का ज्ञान देने, घोर अधर्म के युग कलियुग में ही आयेंगे तब अधर्म का नाश कर सत्धर्म या सनातन धर्म की पुन:स्थापन करेंगे। तभी उनके आने का उद्देश्य सिद्ध होगा। परन्तु मनुष्य आत्माओं ने परमात्मा को पुकारा तो उन भक्तों की पुकार को अनसुना भी तो नहीं कर सकते इसलिए द्वापर में कुछ महान आत्माओं का जन्म संसार में होता है जो परमात्मा का पैगाम लेकर आते हैं। सबसे पहले इब्राहिम आए, जिन्होंने इस्लाम धर्म की स्थापना की। उसके बाद महात्मा बुद्ध आए। जिन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की और उसके बाद जीसस क्राइस्ट आए जिन्होंने क्रिश्चियन धर्म की स्थापना की। भारत में हर राज्य में किसी न किसी महान पुरुष का जन्म हुआ है। किसी भी माहापुरुष ने यह नहीं कहा कि हम भगवान हैं। हरेक ने यही कहा कि भगवान एक है,और हम उसका पैगाम लेकर आए हैं। इसलिए सभी धर्मो मूल सिद्धांत भी एक ही है। कोई धर्म लड़ाई करना नहीं सिखाता। कोई धर्म बुराई करना नहीं सिखाता। हर धर्म की शिक्षाएं एक जैसी ही हैं। परन्तु इन महान् आत्माओं ने जिस समाज में जन्म लिया था, उस समाज की रचना को देखते हुए उन्होंने समय के संकेत को समझते हुए कुछ प्रचार आरंभ किया। यह प्रचार कार्य अलग-अलग तरीके से किया गया था जिस कारण उनके धर्म या संप्रदाय का निर्माण हुआ।

इस्लाम धर्म

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक इब्राहिम जहाँ गए थे वहाँ के समाज के रचना में जीवन जीने के सिद्धांतों का अभाव था। इसीलिए उन्होंने अपने प्रचार में जीवन जीने के कुछ सिद्धांत बताए जो आज भी उनकी पवित्र धर्म पुस्तक में लिखे हुए हैं।

बौद्ध धर्म

बुद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध ने समाज की रचना में दो बातों की कमी देखी। एक यह कि मानव दिन-प्रतिदिन बहुत ही धर्म भ्रष्ट और कर्मभ्रष्ट हो रहे है। उनके जीवन में दया नाम की कोई चीज नहीं रही है। तब उन्होने अपने प्रचार में कहा 'दया ही धर्म है,दया धर्म का मूल है। प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखो, और कर्म ही धर्म है।' परन्तु अफसोस की बात यह है कि जिस समाज में इन महात्माओं की शिक्षाओं की गहराई को समाज के लोगों ने समझा नहीं इसलिए उन शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण नहीं कर पाये। महात्मा बुद्ध को बहुत मानते है लेकिन महात्मा बुद्ध की मानते नहीं।

क्रमश:....

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

विचार का परिवर्तन ही जीवन परिवर्तन है

हमारा देश महान

सम्पूर्ण इतिहास को देखें जितने महान पुरुष भारत में जन्में है उतने सारे संसार में मिलकर भी नहीं जन्में हैं। हमारा देश महान देश है। हमारे ब्रह्माकुमारीज़ का रशिया में बहुत सेन्टर हैं जहां की 21 कन्याओं ने अपने जीवन को समर्पित किया, उनमें से 9 हमारे यहां ज्ञानसरोवर में आई, उनमें से एक ने अपना अनुभव सुनायी कि मैं भगवान की खोज में भारत चार बार आयी। मैंने उससे पूछा नाम तो संसार में अमेरिका का बहुत है अमेरिका क्यों नहीं गई? मेरी बात से सोचने लगी, अमेरिका! भगवान की बात हो, चाहे शांति की बात हो, ज्ञान की खोज हो तो मनुष्य कहां आता है? सिर्फ भारत में, यही सत्य है।

अच्छे कर्म से अगला जन्म भारत में

एक बार ब्रह्माकुमारीज़ में दिल्ली से चीन के एम्बेसडर को बुलाया गया। उन्होंने एक वंडरफुल बात कही कि हमारे देश में ये मान्यता है कि अगर कोई मनुष्य अच्छे कर्म करेगा तो उसका अगला जन्म भारत में होगा। ऐसी भूमि पर हम बैठे हैं जो संसार में सब से महान है यहीं से विद्या सारे संसार को गई थी। सब कुछ यहीं से गया। अनेक विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत पर आक्रमण कर लूट-लूट कर ले गए, भारत फिर भी दाता ही रहा। भारत का इतिहास है कि हमने किसी पर आक्रमण नहीं किया क्योंकि हम आरंभ से ही भरपूर थे। हम कंगालों पर आक्रमण करके क्या करेंगे? कोई भूमि महान दीवारों से जमीन से महान नहीं बनती सिर्फ वहां के मनुष्यों से महान बनती है। हम सभी में देवत्व है हम अपने इस देवत्व को पहचान कर भारत को महान बनाएंगे।

वैज्ञानिकों ने भी पुनर्जन्म को माना

हम सभी भारत वाले कर्म फिलॉसफी में विश्वाश रखते हैं। हमारे भारतवर्ष में पुनर्जन्म को भी मानते हैं। क्रिश्चियन धर्म, मुस्लिम धर्म में पुनर्जन्म को नहीं माना गया है। अब वहां भी बहुत लोग मानने लगे हैं क्योंकि वैज्ञानिकों ने ऐसी खोज कर दी कि उन्हें भी मानना पड़ा कि पुनर्जन्म होता है। जो भी कर्म हम करते हैं वो सब हमारे पास रहते हैं। बहुत सूक्ष्मता से आज हम इस बात पर चिंतन करेंगे। सतयुग और त्रेता युग में अकर्म थे। द्वापरयुग से पुण्य और पाप कर्म शुरू हुए, जब मनुष्य पूण्य करता था तब सुखी था। जो कर्म हम करते हैं वो सूक्ष्म तरंगों से ब्रेन में प्रिंट होता रहता है।

हमारा ब्रेन कंप्यूटर डिस्क से भी कई गुणा पावरफूल

मनोविज्ञान में मन की तीन स्थितयों का वर्णन किया गया है- चेतन मन, अचेतन मन, अवचेतन मन। जिसको वो अचेतन मन कहते हैं सच तो ये है कि मन कभी अचेतन होता ही नहीं। मन तो चेतन है सोच रहे हैं हम। लेकिन जो कर्म हम करते आते है अच्छे या बुरे वो सब ब्रेन में प्रिंट हो गया, कभी मनुष्य पूण्य तो कभी पाप करता है। हम सब का ब्रेन बहुत बड़ा है जिसकी तुलना हम कंप्यूटर की हार्ड डिस्क, सॉफ्ट डिस्क से कर सकते हैं। हम सब जानते हैं छोटे से मेमोरी कार्ड, चिप में कितना माल भर जाता है। ब्रेन तो इनकी भेंट में बहुत बड़ा है तो पूरे 5 हजार साल का सारा रिकॉर्डिंग अच्छा या बुरा सारा भर जाता है। जो पहले भरा था वो नीचे हो गया, जो अब भरा वो ऊपर एक्टिव है। नीचे वाला अभी अवचेतन जो दबा हुआ है।

पाप विकर्मो को राजयोग से भस्म करना

अब हमें पाप को राजयोग अभ्यास से खत्म करना है। जब हम सर्वशक्तिवान से सर्वशक्तिओं का प्रकम्पन लेते है जो योग अग्नि बन जाता है और वो अग्नि जो अंदर में भरी हुई है वो जल कर नष्ट होने लगती है। हमारा ब्रेन, माइंड और बुद्धि सब क्लीन होने लगती है। हम हल्के होने लगते है। यहां ये पापकर्म भी बीमारियों के कारण है क्योंकि जो कुछ यहां भरा हुआ है वो सब माइंड को भी प्रभावित करता है। मन में अगर गंदगी है तो विचार तो सूंदर होंगे नहीं। वो हमारे मन को प्रदूषित करता है विकृत करता है। उससे कर्म और विकृत होते हैं। जीवन की कठिन यात्रा को चेंज करना है तो लंबी चौड़ी बात नहीं विचारों को बदल दो तो जीवन बदल जायेगा। विचार परिवर्तन जीवन परिवर्तन है। ज्यादा सोचने की आदत, ज्यादा उम्मीद, सब मेरी महिमा करें कि तुम बहुत अच्छी हो तब तो मैं खुश और किसी ने जरा भी कह दिया तुमने खाना तो बनाया पर नमक थोड़ा कम रख दिया इतने में ही खुशी गायब। इसलिए जिसे जीवन को एन्जॉय करना है वो अपनी नेचर को लाइट हल्के रखें।

अमृतसर के स्कूल, हॉस्पिटल व जेल में क्रोध प्रबंधन एवं नैतिक मूल्यों पर चर्चा

शिव आमंत्रण » अमृतसर। पंजाब के अमृतसर स्थित अधलखा हॉस्पिटल ऑडिटोरियम में जीवन में कैसे खुश और स्वस्थ रहा जाए इस विषय पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें हॉस्पिटल का स्टाफ एवं कलर लौंज सलून के मेम्बर्स शामिल हुए। इसी तरह स्प्रिंग फील्ड स्कूल, मैजिक ईयर स्कूल, फोर्टीज़ हॉस्पिटल, जेल तथा अन्य कई स्थानों में क्रोध प्रबंधन, जीवन में नैतिक मूल्यों के महत्व विषय पर चर्चा की गई। इस अवसर पर माउण्ट आबू से बीके ओंकार, बीके मीनाक्षी तथा बीके रीना ने आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा कर आयोजित विषयों पर प्रकाश डाला।

विश्व शांति भवन में दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि एवं श्रोतागण।

आंतरिक सशक्तिकरण के बिना महिलाओं का गौरव असंभव

प्रतियोगिता में स्थान पाने वाली महिलाओं के साथ निर्णायक मंडल।

शिव आमंत्रण » बहल। सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से बहल के पंचायत घर में आंगनवाड़ी वर्कर्स के लिए मेहंदी रचाओ, हेल्दी रेसिपी और स्लोगन पेंटिंग बनाने के लिए 3 प्रतियोगिताएं रखी गयी। इस कार्यक्रम में बहल (हरियाणा) के ब्रह्माकुमारीज को भी आमंत्रित किया गया। जब तक महिलाओं में निर्भयता, विपरीत परिस्थिति से लड़ने की क्षमता और स्वयं निर्णय लेने की बुद्धि का विकास नहीं होगा तब तक वह योग्य होकर भी कहीं ना कहीं अनावश्यक दबाव महसूस करेंगी। इसलिए स्वयं के सत्य पहचान और प्रतिदिन ध्यान के लिए भी थोड़ा समय निकालें तो महिलाएं आंतरिक रूप से सशक्त बनेगी।

अमृतसर में द सीक्रेट्स ऑफ माइंड पावर पर सेमिनार आयोजित

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि एवम् उपस्थित श्रोतागण।

शिव आमंत्रण » अमृतसर। राजयोग से लाखों लोग लाभान्वित हुए हैं और वे अब अपने काम में निपुणता के साथ लगे हुए हैं। राजयोग एक ऐसी शिक्षा है जो सभी आयु वर्ग के लोगों द्वारा आसानी से की जा सकती है, इसलिए आज की स्थिति के अनुसार, हमें राजयोग को प्रतिदिन 1 घंटा देना होगा ताकि आप अपनी सभी बुरी आदतों को 7 दिनों में छोड़ सकें। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज के माऊण्ट आबू मुख्यालय से पधारे राजयोगी बीके सूरज ने व्यक्त किये। ऑडिटोरियम, बटाला रोड में आयोजित 'द सीक्रेट्स ऑफ माइंड पावर' सेमिनार में वह सभा को संबोधित कर रहे थे।

अग्निकांड में मृत छात्रों की आत्म शांति के लिए प्रार्थना सभा

शिव आमंत्रण » सूरत। सरथाणा, सूरत अग्निकांड में मारे गये कोचिंग के छात्रों की आत्म शांति के लिए प्रार्थना सभा आयोजित की गयी। सरथाणा में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इन बच्चों की आत्म शांति एवं उनके परिवार जनों को आंतरिक रुप से शक्ति मिले इसके लिए विशाल राजयोग ध्यान सभा का आयोजन किया गया, जिसमें वराछा सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके तृप्ति समेत हज़ारों की संख्या में बीके सदस्यों ने दिवंगत आत्माओं को शांति का दान दें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर बच्चों के देखभाल के लिए ध्यान रखते हुए माता पिता से विशेष अपील की गयी।

तक्षशिला कॉम्प्लेक्स में लगी भीषण आग में 22 छात्रों की मौत हुई उनको शांति का दान देने के लिए आयोजित सभा में उपस्थित भाई बहनें।

सहयोग ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनों ने प्रभावित क्षेत्रों में बांटी राहत सामग्री

चक्रवाती तूफान पीड़ीतो की मदद के बढ़ाए हाथ

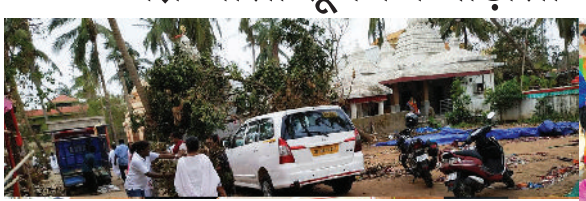

भोजन और राहत सामग्री बांटते पाटिया के बीके सदस्य।

शिव आमंत्रण » भुवनेश्वर। 3 मई को ओडिशा में भारी बारिश और 175 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार वाली प्रचंड हवाओं के साथ चक्रवाती तूफान'फानी' कारण शहरों में 10 दिनों से अधिक समय तक निवासियों को बिजली और पानी उपलब्ध नहीं था। चक्रवात के बाद, ब्रह्माकुमारीज अलारपुर ने स्थानीय निवासियों को मोबाइल, टॉर्च और आपातकालीन रोशनी को चार्ज करने में मदद की। इसके साथ ही 10 से अधिक दिनों के लिए भुवनेश्वर शहर के निवासियों को प्रतिदिन 30 से अधिक पेयजल की आपूर्ति की। सब्जियों और आम की आपूर्ति भी की गई। साथ ही साथ 100 किलोग्राम चावल पीयुएसएस के बेसहारा और गरीब लड़कियों के लिए दिया गया।

मार्कंडपुर गांव को मदद: ऐसे ही पाटिया सेवाकेंद्र द्वारा मार्कंडपुर गांव एवं पुरी सदर ब्लॉक के बलिपुत ग्राम पंचायत के तहत मदद की।

सार समाचार

शिक्षण संस्थान, जेल में पहुंचा समाज सेवा अभियान

शिव आमंत्रण » कुरुक्षेत्र। समाज सेवा अभियान के हरियाणा में कुरुक्षेत्र पहुंचने पर पिपली उपसेवाकेन्द्र में अभियान दल का स्वागत हुआ, जिसके पश्चात् विकास बोर्ड के प्रधान रमेश, गुरुद्वारे कमेटी के प्रधान रब सिंह की मुख्य उपस्थिति रही। इस अभियान के द्वारा कुरुक्षेत्र के विभिन्न स्कूल, कॉलेज, नशामुक्ति केन्द्र, जेल आदि स्थानों में कार्यक्रम रखे गए और जीवन में सफलता का आधार खुशी और नैतिक मूल्य को बताते हुए समाज को बेहतर बनाने का आह्वान किया।

ईश्वर के प्रति समर्पण भाव और अहंकार के त्याग से हम जी सकते हैं सुखमय जीवन : आचार्य देवव्रत

शिव आमंत्रण » शिमला। राजधानी के उपनगर पंथाघाटी स्थित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेवा केंद्र में साइंटिस्ट व इंजीनियर विंग की राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी को संबोधित करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा, कि आनंद स्वरूप ईश्वर के प्रति समर्पण भाव और अहंकार के त्याग से हम सुखमय जीवन जी सकते हैं। जीवन में सकारात्मक सोच पैदा करें। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश से आए करीब 150 वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों के साथ लगभग 500 लोगों ने भाग लिया।

मोबाइल के बजाय माता-पिता के साथ समय बिताएं बच्चे : बीके मंजू

शिव आमंत्रण » टिकरापारा। "जीवन में किसी भी व्यक्ति को छोटा न समझें, उनकी निंदा न करें क्योंकि एक छोटे से तिनके के भी आंखों में चले जाने से बहुत पीड़ा होने लगती है इसलिए सदा अपने छोटों को प्यार दें व बड़ों को रिस्पेक्ट व रिगार्ड दें। मोबाइल का प्रयोग हम अपनी पढ़ाई के लिए भल करें लेकिन उसका भी समय निर्धारित करें और ज्यादा समय मोबाइल में न देकर अपने पैरेन्ट्स के साथ समय जरूर बितायें।" उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा सेवाकेन्द्र में बाल संस्कार शिविर में बच्चों को संस्कार की बातें बताते हुए सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मंजू ने व्यक्त किये।

हंसते-हंसते रोग भगाओ, मनाया वर्ल्ड लाफ्टर डे

शिव आमंत्रण » वड़ोदरा। दुनिया भर के करीब 70 देशों में मई के पहले रविवार को वर्ल्ड लाफ्टर डे मनाया जाता है। इसी के तहत वड़ोदरा के कमलानगर सेवाकेंद्र पर विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसे मुख्य वक्ता एनाटोमी के प्रोफेसर डॉ. अनिल बधिजा, बीके मिनेश और राजयोग शिक्षिका बीके हिमानी द्वारा सभा को संबोधित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीके डॉ. अनिल बधिजा ने हास्य एवं खुशी में रहने के शारीरिक एवं मानसिक फायदों पर सभी का ध्यान खिंचवाया। उन्होने कहा, खुशी में रहने से शरीर में प्रतिकार शक्ति बढ़ती है और हम बिना खर्चे निरोग रह सकते है। बीके मिनेश ने सभी को हंसते हंसते ईश्वरीय ज्ञान दिया। बीके हिमानी ने सभी को कॉमेंट्री द्वारा राजयोग का अनुभव कराया।

विश्व शांति ध्यान साधना कार्यक्रम में फिल्म व टीवी जगत की हस्तियों ने की शिरकत

ब्रह्माकुमारी बहनों ने सामूहिक रूप से राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से विश्व शांति के लिए प्रकम्पन फैलाए।

शिव आमंत्रण › मुंबई। गोरेगांव वेस्ट स्थित बांगुर नगर में विश्व शांति के लिए ध्यान साधना कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में फिल्म तथा टी.वी. इंडस्ट्री की हस्तियां भाग लेने पहुँची। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में मौजूद संस्था के सदस्यों ने राजयोग ध्यान कर आत्मिक स्वरुप का अभ्यास किया और विश्व में शांति के प्रकम्पन फैलाएं। इस अवसर पर बीके ई.वी. गिरिश ने बोरीवली सबज़ोन प्रभारी बीके दिव्यप्रभा, मलाड सेवाकेन्द्रों की प्रभारी बीके कुन्ती, कांदिवली वेस्ट सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके राज से आध्यात्मिक ज्ञान एवं शिक्षाओं को लेकर कई दिलचस्प सवाल पूछे। मंच पर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते फिल्मी कलाकारों में फिल्म एक्टर, डायरेक्टर, प्रोड्यूसर बिस्वजीत चैटर्जी; म्यूज़िक डायरेक्टर, राइटर एवं सिंगर ओम व्यास; सिंगर हरिश मोयल; अभिनेत्री पूजा घोष, चांद मिश्रा समेत अन्य कई हस्तियां ने जो राजयोग के संपर्क में नही है उन्होने जल्द ही राजयोग सीखने की इच्छा व्यक्त की।

स्वर्णिम दुनिया फिर से आ रही, अपने को सजाए रखोः बीके कमलेश

उपनिदेशक एसके सिंह को शिव आमंत्रण भेंट करती बीके कमलेश।

शिव आमंत्रण › हरदुआगंज। उत्तर प्रदेश सरकार के पंचायती राज विभाग द्वारा आयुक्त अलीगढ़ मंडल का सभागार में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए हरदुआगंज सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कमलेश ने कहा, कि पंचायती राज वर्तमान समय की आवश्यकता है। भारत के अंदर राजाएं जब निरंकुश हो जाते हैं तो प्रजातंत्र का उदय होता है। परमात्मा ने जब यह दुनिया बनाई थी तो उस समय प्रजातंत्र नहीं था। भारत में राजाओं-महाराजाओं का राज्य था जो देवी-देवताओं के रूप में थे। वर्तमान समय के लिए यही सर्वश्रेष्ठ है। अब परमात्मा फिर नई दुनिया की स्थापना के लिए धरती पर अवतरित हो चुके हैं। तो अब स्वयं को भी जानना है आप ज्योति बिंदु आत्मा है और परमात्मा को भी जानना है वह भी ज्योति स्वरूप हैं। स्वर्णिम दुनिया फिर से आ रही अपने को सजाये रखो।

हर सामाजिक पहलू को उजागर करता है मीडिया

विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस मनाते हुए पत्रकार।

शिव आमंत्रण › फिरोजाबाद। ज्योति भवन ब्रह्माकुमारीज़ सेवा केंद्र, कैला देवी मन्दिर के सामने विश्व प्रेस स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। मीडिया के कार्य की सराहना करते हुए फिरोजाबाद सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरिता ने बताया कि मीडिया धूप, बरसात, परिस्थितियां चाहे कैसी भी हो फिर भी हर सामाजिक पहलू को उजागर करते रहता है। दैनिक जागरण ब्यूरो चीफ राहुल सिंघई ने बताया, कि मीडिया सबकी दोस्त है। वह हर क्षेत्र को उजागर करती है। चाहे वह सामाजिक हो या आध्यात्मिक थोड़ा लोगों को भी जागरूक होना पड़ेगा। आस-पास कुछ होता है तो मीडिया को बतायें तभी तो मीडिया कुछ कर सकेगी। ज्योति भवन ब्रह्माकुमारीज़ सेवा केंद्र, कैला देवी मन्दिर के सामने विश्व प्रेस स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर केशरी, यूपी 24 न्यूज, फिरोजाबाद 24 न्यूज़, डीएल, भारत समाचार, दमू से द मीडिया पर्सन उपस्थित थे।

समर कैंप | शांति सरोवर में 9वें समर कैंप का आयोजन, बच्चों ने उत्साह से लिया भाग

दो राज्यों के 265 बच्चों को पढ़ाया आध्यात्म का पाठ

शिव आमंत्रण › हैदराबाद। शांति सरोवर में हर वर्ष राज्यव्यापी बीके चिल्ड्रन कैम्प आयोजित किया। इस वर्ष भी 9वें समर कैम्प का आयोजन हुआ, जिसका शुभारम्भ साउथ इंडियन फिल्म एक्ट्रेस एवं टी.वी. एंकर अनसूया भारद्वाज, शांति सरोवर की निदेशिका बीके कुलदीप, साइकैट्रिस्ट डॉ. पुर्निमा नागराज समेत अन्य मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया, कैम्प में आंध्रप्रदेश तथा तेलंगाना से 265 बच्चे भाग लेने पहुंचे। इस दौरान वैजीटेबल कारविंग, फैंसी ड्रेस तथा ड्राइंग कॉम्पिटीशन आयोजित किया गया। जिसके बाद समापन में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों समेत आत्मा कर्मेन्द्रियों की राजा बने थीम पर नाटक की प्रस्तुति भी दी गई।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते अनसूया भारद्वाज तथा अन्य अतिथि।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र

संतोषी सदा सुखी

संतोष व संतुष्ठता का भाव जब हमारे अंतर्मन की चौखट पर दस्तक देने लगे तो निश्चित मानिए आपने सुखी जीवन का हाईवे पकड़ लिया है। क्योंकि यह परम सत्य है कि बिना संतोष के जीवन में सुख नहीं आ सकता है। यदि आप चाहते हैं कि जीवन में सुख-शांति और आनंद हो तो संतोषी बनना ही होगा। इसके अलावा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है, क्योंकि इस संसार में हर चीज हमारे मन के मुताबिक नहीं हो सकती है। जीवन में घटने वाली हर घटना के प्रति साक्षी भाव और साक्षी दृष्टा का नजरिया रखने से हम क्या, क्यों के भंवरजाल में फंसने के बजाय चीजों के बेहतर हल तलाशने में अपनी ऊर्जा लगाते हैं। साथ ही घटनाओं, परिस्थिति वा समस्याओं से प्रभावित होने की जगह कल्याण और संतुष्टि का भाव प्रबल होने लगता है। संतोष का मतलब ये नहीं है कि हम जीवन में प्रयत्न करना, आगे बढ़ना और लक्ष्य को छोड़ दें। संतोष अर्थात हर घटना में मन का स्थिर होना। सफलता-असफलता को समान रूप से स्वीकार करना। यदि आप जरा सी परिस्थिति में घबरा जाते हैं, मन बेचैन हो जाता है और उसमें आसक्ति का भाव जागृत होकर उसे ही सत्य मानकर चलते हैं तो समझिए आप पूर्णरूपेण जीवन उपवन का आनंद नहीं ले पाएंगे। वर्तमान में हम ज्यादा पाने के चक्कर और लालसा में अपना वास्तविक सुख-चैन गवां चुके हैं। अर्थ की अंधी दौड़ में इन अमूल्य सांसों की कीमत और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को कहीं पीछे छोड़ दिया है।

मूर्ति की जगह मंदिर को मान लिया सत्य...

दरअसल हमने अपने आपको आध्यात्मिक रूप से सशक्त, सम्पन्न और समृद्ध बनाने की जगह लोहा, लकड़ी और प्लास्टिक के संचय को जीवन का अर्थ और उद्देश्य मान लिया है। हम ये भूल ही गए हैं कि इस शरीर रूपी मंदिर में एक सुंदर मूर्ति (आत्मा) विराजमान है जिसकी हमें आराधना करनी थी। इसकी जगह मंदिर की आराधना करने लगे। उसे ही सजाने, संवारने को सत्य मान लिया और उसके विकास में जीवन ऊर्जा को झोंक दिया। ऐसे में मंदिर में विराजमान सुंदर मूर्ति पर कब धूल चढ़ गई और कब वह देखरेख के अभाव में जर्जर होकर खंडित हो गई इसे बिसरा दिया। यही नहीं परमात्मा की इस सुंदर बगिया में कई मूर्ति खंडित होकर संसार रूपी बगीचे की शोभा को नष्ट कर रहीं हैं। ऐसे में ये सवाल महत्वपूर्ण है कि क्या हमने भी अपनी मूर्ति की आराधना जारी रखी है या मंदिर को ही सजाने-संवारने में जुटे हैं? क्या रोजाना इस महान मूर्ति के दर्शन की तीव्र उत्कंठा मन में जागृत होती है? क्या रोज मूर्ति को ज्ञान स्नान के साथ योग और साधना रूपी पुष्प का अर्पण करते हैं? क्या हमारे जीवन का उद्देश्य आत्मिक समृद्धि है या लकड़ी, लोहा और प्लास्टिक? क्या जीवन के अनमोल क्षणों को सुखपूर्वक आनंद ले रहे हैं? आध्यात्मिकता हमें सिखाती है कि हर घटना में कल्याण समाया हुआ है। आज जो घटित हो रहा है कल्प पहले भी इसी तरह सृष्टि चक्र में ये घटित हुआ था।

हमारा जीवन पूर्व के कर्मों का प्रतिफल...

आज हमारा जो जीवन है वो हमारे ही कर्मों का प्रतिफल है। इसलिए दुःख, संताप करने की बजाय इस बगिया को सद्गुणों की महक से महकाते चलें, जो खुद को खुशबू देने के साथ दूसरों को भी अपनी सुगंध से महकाती है। साथ ही मूर्ति की चमक बढ़ती है और उसका मान भी। संतोष रूपी एक सद्गुण अपनाने से जीवन तो सुखी बनता ही है अन्य सद्गुण भी चले आते हैं। इसलिए कहा गया है संतोषी परम सुखी। संतोष में ही सच्चा सुख और आनंद है। परमात्मा को पाने के बाद कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है। ये सुनहरा मौका अभी है, इसे खोने न दें।

लेखक शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक हैं।

" ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की बीके मीरा के पहुंचने पर कई शहरों में कार्यक्रम आयोजित

श्रीलंका में दिया राजयोग मेडिटेशन व आध्यात्म का संदेश

कोलंबो में बीके मीरा के आगमन पर सदस्यों द्वारा कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आयोजित की गईं

शिव आमंत्रण » कोलंबो। मलेशिया में ब्रह्माकुमारीज़ की निदेशिका बीके मीरा 12 दिवसीय श्रीलंका दौरे पर देहिवाला पहुंची। उनके आगमन पर बीके श्रीमा तथा बीके रानी ने उनका स्वागत किया, जिसके पश्चात् बीके मीरा ने सेवाकेन्द्र से जुड़े सदस्यों से ईश्वरीय ज्ञान चर्चा की और आगे माताओं को स्वर्णिम युग की पुनर्स्थापना में भूमिका पर उनको प्रेरित किया। इसी क्रम में बट्टिकालोवा, कोटाहोना, त्रिंकोमाली, वावुनिया, जाफना, मुल्लैतिवु, कैंडी समेत अन्य कई शहरों में भी बीके मीरा के पहुंचने पर कई कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें विशेष शांतिपूर्ण जीवन के लिए दैनिक समाधान, एक सच्चे राजयोगी की योग्यताएं समेत अन्य कई विषयों पर सदस्यों को लाभान्वित किया। सदस्यों द्वारा कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी आयोजित की गई। सभी शहरों से होते हुए कोलंबो के देहिवाला में सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन सवसिरिपया सभागार में हुआ, जहां बैलेंस इन आई.क्यू एण्ड ई.क्यू एस.क्यू विषय पर मौजूद ट्रिफोरसिस तथा पुसिल के सदस्यों को सम्बोधित किया। सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव एस. अरुल राजा, राष्ट्रीय नीतियों और आर्थिक मामलों के मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव के. महेसन तथा ब्यूरो ऑफ कमिश्नर जनरल ऑफ रिहेबिलिटेशन प्रीदीप परेरा की मुख्य उपस्थिति रही।

कैंडी में बीके मीरा का कैंडियन नृत्य से स्वागत करते बीके सदस्य।

युगांडा के राष्ट्रपति मुसेवेनी से सिस्टर निपा ने की मुलाकात

शिव आमंत्रण » जिंजा। युगांडा के राष्ट्रपति योवेरी मुसेवेनी से सिस्टर निपा ने मुलाकात की। अवसर जिंजा में कारखानों के उद्घाटन का था जहां राष्ट्रपति योवेरी ने विशेष रुप से अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर मौके को खास बना दिया। इस दौरान सिस्टर निपा ने उनसे मुलाकात तो की ही साथ ही साथ ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं की जानकारी दी। इस दौरान दक्षिण अफ्रिका में चलाए जा रहे प्रोजेक्ट पॉज़ फॉर पीस के तहत वहां मौजूद लोगों को राजयोग का अभ्यास भी कराया गया।

युगाण्डा के राष्ट्रपति योवेरी मुसेवेनी से मुलाकात कर ईश्वरीय सौगात भेंट करती सिस्टर निपा।

इस आयोजन में सिस्टर निपा ने कॉटन डेवलपमेंट ऑर्गेनाइज़ेशन की मैनेजिंग डायरेक्टर जॉली सबाइन समेत अन्य सीनियर गर्वमेंट ऑफिशियल्स से भी मुलाकात की।

सामाजिक कार्यकर्ताओं को सिखाया राजयोग ध्यान

शिव आमंत्रण » टैक्लोबैन। फिलीपींस के विसाया द्वीप के ल्येटे में ईश्वरीय सेवाओं के दो साल पूर्ण होने पर टैक्लोबैन में डिपार्टमेंट ऑफ सोशल वेलफेयर एंड डेवलपमेंट एवं ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त प्रयास से विभिन्न विभागों, वर्गों और इकाइयों के सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए सेल्फ केयर एंड मेडिटेशन विषय के तहत कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस सत्र को संबोधित करने के लिए विशेष तौर पर वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके बैकि को आमंत्रित किया गया। इसके अलावा, 'कर्म और मौन' विषय पर विशेष रूप से बीके सदस्यों के लिए कार्यक्रम रखा गया जिसमें बी.के. जोनाथन और बी.के. जौन लुइस ने सभा को मार्गदर्शित किया तो वही बी.के. रानी द्वारा राजयोग की कई गतिविधियां कराई गई।

जागरुकता

मॉरीशस में लगाई रोड सेफ्टी एवं ज्ञान प्रदर्शनी

यातायात नियमों के पालन करने का दिया संदेश

सड़क सुरक्षा के साथ आत्मिक गुणों के बारे मे समझाते हुए बीके सदस्य।

शिव आमंत्रण » पोर्ट लुईस। पांचवें यूएन ग्लोबल रोड सेफ्टी वीक के अंतर्गत मॉरीशस स्थित ओ कुली कम्युनिटी डेवलपमेंट सेंटर में बच्चों और अभिभावकों के लिए सड़क सुरक्षा पर गतिविधियाँ करवाई गई। यह आयोजन ब्रह्माकुमारीज ने ओ कुली कम्युनिटी डेवलपमेंट एसोसिएशन, मिनिस्ट्री ऑफ जेंडर इक्वालिटी, चाइल्ड डेवलपमेंट एंड फॅमिली वेलफेयर, ट्रैफिक मैनेजमेंट रोड सेफ्टी यूनिट और मॉरीशस पुलिस फोर्स के साथ मिलकर किया था। इस मौके पर नगर परिषद काउंसिल के मेयर हंस मार्गरेट, ब्रह्माकुमारीज से राजयोग शिक्षिका बीके गीता, सड़क सुरक्षा परियोजना के समन्वयक प्रदीप, एसोसिएशन के अध्यक्ष एस चेलेन समेत कई गणमान्य अतिथियों ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर सड़क सुरक्षा प्रदर्शनी, सुरक्षा बेल्ट डेमो, ''रोल-ओवर कार'', पैदल चलने वालों के लिए व्यावहारिक सड़क सुरक्षा नियम, ट्रैफिक लाइट पर गेम्स और वर्च्युज गेम्स जैसी कई गतिविधियों का आयोजन किया गया था।

सार समाचार

न्यूयार्क में सामाजिक सेवाओं को हुए 20 साल, कई लोगों ने अपनाई आध्यात्म की राह

शिव आमंत्रण » न्यूयॉर्क। अमेरिका के कैत्सिल माउंटेन पर स्थित न्यूयॉर्क का बह्माकुमारीज पीस विलेज लर्निंग एंड रिट्रीट सेंटर जो यूएसए में आध्यात्मिक सेवा की 20 वीं वर्षगांठ मना रहा है यह किसी चमत्कार से कम नहीं है कि भौतिकी और विज्ञान की भूमि, पीस विलेज द्वारा शांति फैलाने की प्रक्रिया को 20 साल पूरे हो गए हैं। जब यह उपलब्धि दुनिया के सबसे महान और आध्यात्मिक नेता, 103 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी तक पहुंची, तो वे खुद को समारंभ में शुभकामनाए देने पहुंचे। उनकी दिव्यता के साथ उत्सव मनाया गया। 20 साल पहले, जब पीस विलेज की नींव रखी गई थी, तब यह भविष्यवाणी नहीं की गई थी कि इसका दुनिया पर इतना प्रभाव पड़ेगा। इससे भी बड़ी बात यह है कि पीस विलेज में आने वाले राजयोगी ऐसे मील के पत्थर साबित हुए जिन्होंने विज्ञान को आध्यात्मिकता की धार दी। अमेरिका, कनाडा और कैरेबियन के लगभग 500 बीके सदस्य इस भव्य समारोह का हिस्सा बनने के लिए पहुंचे।

उत्तरी लंदन में दादी जानकी के आगमन पर स्नेह मिलन कार्यक्रम, बड़ी संख्या में जुटे लोग

शिव आमंत्रण » लंदन। न्यूयॉर्क से पहले, अभूतपूर्व स्नेह मिलन कार्यक्रम लंदन में आयोजित किया गया था। जहां ब्रिटेन का ब्राह्मण परिवार दादी जानकी की शक्तिशाली दृष्टी और आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए इकट्ठा हो गया था। एकता और प्यार के थीम पर यह कार्यक्रम उत्तरी लंदन के मेरिडे ग्रैंड हॉल में आयोजित किया गया था। हॉल को एक सूक्ष्म स्थान में तब्दील किया गया था, झुंबर मे विविध प्रकार के बल्ब जलाकर जगमगाया गया था और मंच को वसंत के फूलों और ब्रह्मा बाबा और दादी जानकी के फोटो की पृष्ठभूमि के साथ खूबसूरती से सजाया गया था। दादी का कलात्मक पेशकश के साथ जीवंत मिश्रण के साथ स्वागत किया। दादी जानकी के साथ बीके हंसा, बीके देवी, बीके कुमार और बीके सचिन भी उपस्थित थे। मध्य पूर्व और यूरोपीय देशों में ब्रह्माकुमारिज की निदेशिका बीके जयंती, बीके जैमिनी और बीके मंदा ने भी दादी जानकी को खास बुलाकर विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया।

ब्राजील में 40 साल से बह रही आध्यात्म की गंगा, वर्षगांठ पर भव्य समारोह आयोजित

शिव आमंत्रण » ब्राजील। ब्रह्माकुमारियों ने आध्यात्मिक रूप से ब्राजिल की सेवा के 40 साल पूरे कर लिए हैं। अपनी 40 वीं वर्षगांठ के अवसर पर जर्मनी में ब्रह्माकुमारियों की निर्देशिका बीके सुदेश ने ब्राजिल का आध्यात्मिक दौरा किया। उसमें कैंपिनास, सेरा नेग्रा, पीरासीकाबा, रियो-द-जनेरियो और अन्य शहर शामील थे। उन्होंने सार्वजनिक सभा, बैठक, रिट्रीट और मेडिटेशन कार्यक्रम को संबोधित किया। बीके सुदेश ने सेर्रा नेगरा रिट्रीट सेंटर, बहिया सल्वाडोर की फेउरल युनिवर्सिटी, लॉरो दे फ्रीटास रिट्रीट सेंटर, लीमिएरा विक्टोरिया थिएटर, पीरासीकाबा कंट्री क्लब, रियो द जनेरियो गेटुलियो वर्गास मेमोरियल और कई और स्थानों का दौरा किया। साओ पावला में आयोजित कार्यक्रम जो साधना करता है वह बदलता है और खुद का ही विकास करता है में बी एन केन ओ डोनेल ने सभा को संबोधित किया।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018
Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

● प्रकाशक एवं मुद्रकः ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादकः प्रो. कमल दीक्षित ● संपादकः ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● लेआउटः अमर (नोएडा) ● RNI No.: RJHIN/2013/53539